मानव मन्दिर

3/93

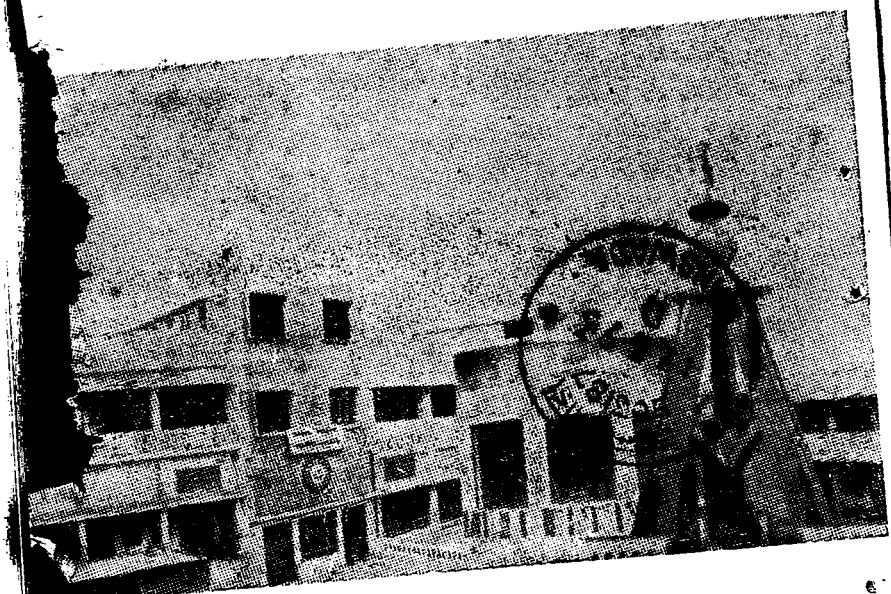

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट

सुतैहरी रोड, होशियारपुर

द्वारा अमूल्य भेंट

संस्थापक : परम सन्त परम दयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज

FORM

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur.
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of publication	Monthly
Printer's Name	Ravi Nanda
Nationality	Indian
Address	Manavata Mandir, Hoshiarpur.
Editor's Name	Ravi Nanda
Nationality	Indian
Address	Manavata Mandir, Sutehti Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one percent of the total	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, Ravi Nanda hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 10

Signature of Publisher

Printed and Published by : Ravi Nanda at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

मानवता मन्दिर होशियारपुर में अगला मासिक सत्संग 14-3-93 को होगा ।

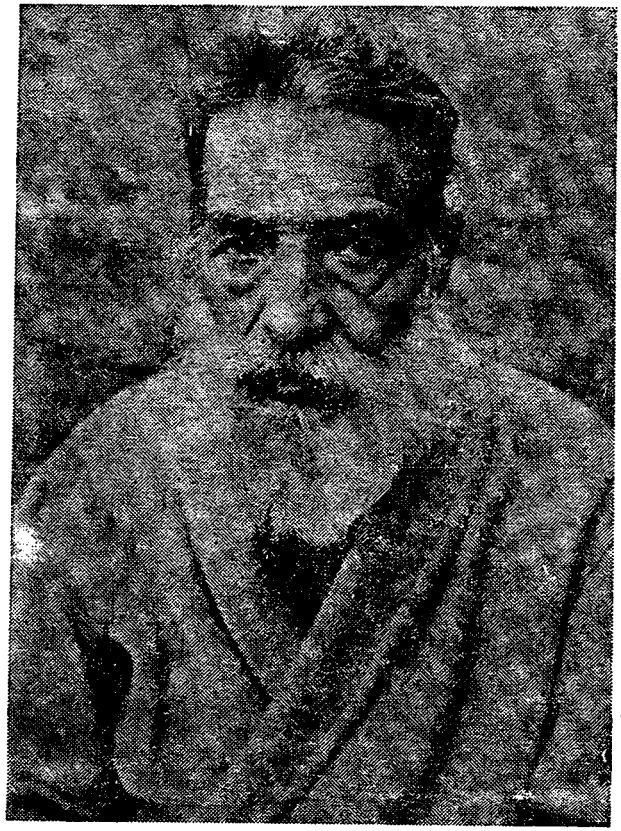

Param Sant Param Dayal
Pt. Faqir Chand Ji Maharaj

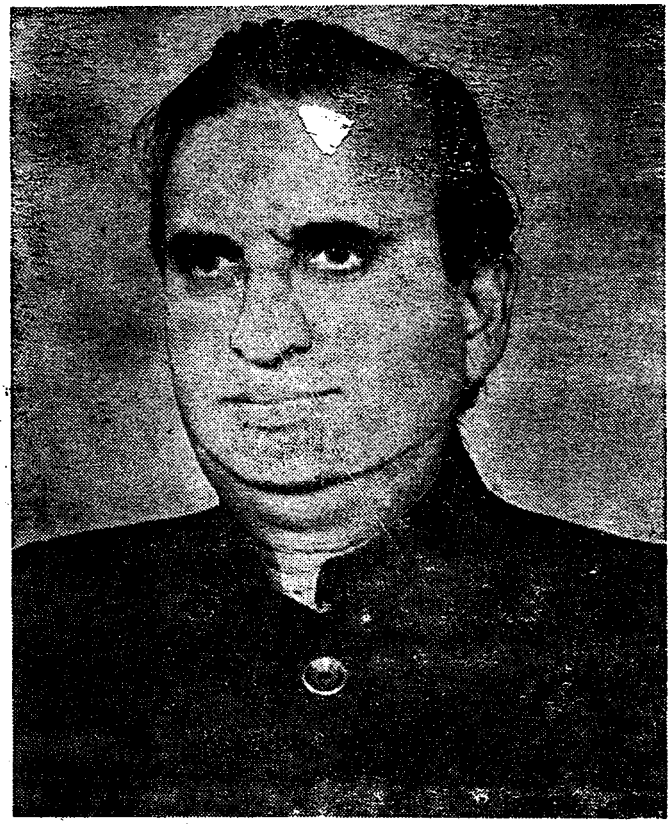

Param Sant Manav Dayal
Dr. I. C. Sharma Ji Maharaj

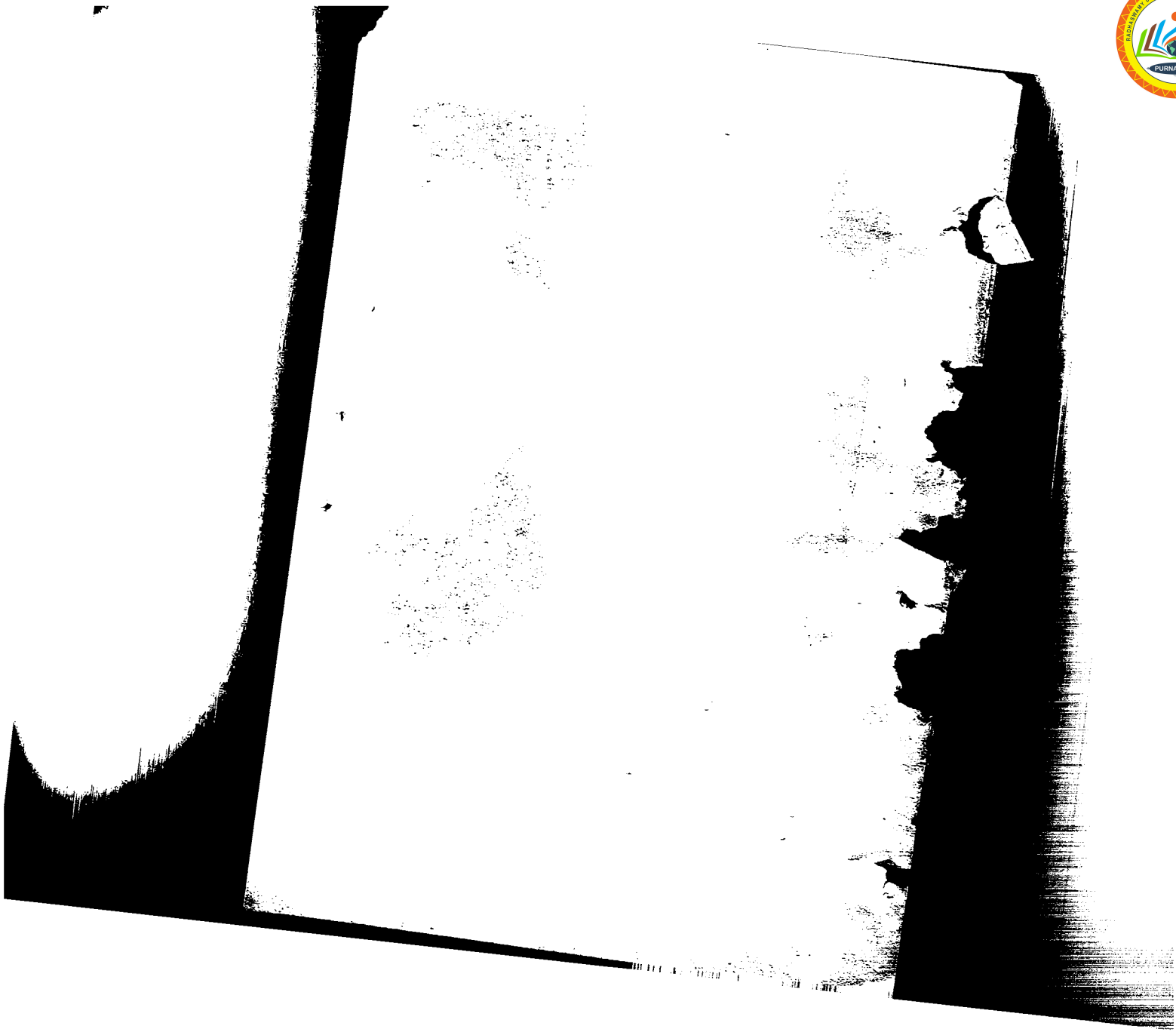

मासिक

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र।

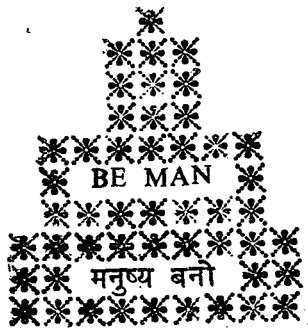

सम्पादक :
श्री रवि नन्दा

वर्ष 19	बुधवार 10 मार्च; 1993	संख्या 11

परम सन्त दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज

कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लोय।
कथनी से करनी करे, तो विष से अमृत होय॥
कथनी के सूरे घने, थोथे बांधे तीर।
प्रेम चोट जिनके लगी, तिनके बिकल सरीर॥
कथनी बदनी छाँड़ कर, करनी से चित लाय।
नर को नीर पिलाये बिन, कबहूं प्यास न जाय॥

एक किस्सा है। कहते हैं कि किसी गाड़ीवान की गाड़ी का पहिया मिट्टी में फंस गया। बैलों ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। गाड़ीवान अधीर हो कर पृथ्वी पर बैठ गया और आकाश की ओर हाथ उठा कर रो-रो कर प्रार्थना करने लगा, "ऐ सर्वशक्तिमान परमेश्वर। अब तेरा ही सहारा है, तेरा ही आसरा है। दीनबन्धु! गाड़ी कीचड़ से निकलती। दया करो प्रभो! दया करो कि गाड़ी कीचड़ से नहीं निकल कर चलने लगे।" वह इस तरह बहुत देर तक रोता रहा। अन्त में आकाश पर उसे दिव्य रूप का एक देवता दिखाई दिया, जिसने क्रोध के आवेग में इस अपाहिज

गाड़ीवान की ओर दृष्टि करके कहा, "हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को पुकारने वाला मूर्ख ! परमेश्वर ने तो तुम्हारी उसी समय सहायता की थी, जब तुमको दो हाथ और दो पांव दिए थे। क्यों नहीं पहिये में अपना कन्धा लगा देता ? व्यर्थ समय नष्ट करता हुआ ईश्वर, ईश्वर कहे जा रहा है। गाड़ीवान को देवता की बात सुनते हुए जोश आया और उसने झट से पहिए में अपना कन्धा लगा कर पूरी शक्ति से पहिए को कीचड़ से बाहर निकालने की कोशिश की, बैलों में भी जोश आया उन्होंने भी पूरा ज़ोर लगाया और कीचड़ में फंसे हुए दोनों पहिए बाहर निकल आए और गाड़ी ज़ोर-ज़ोर से चलने लगी। गाड़ीवान प्रसन्न हो गया और देवता उच्च स्वर में गाता हुआ आकाश की ओर उड़ गया।

"मदद हक उनकी करता है, मदद जो अपनी करते हैं"

यह कहावत अक्षरश सत्य है।

संसार में हम तुम सब लोग पार्वती के पुत्र हैं। पार्वती का मतलब है पर्वतवाली अथवा पर्वत के समान हठ करने वाली, जिसके हठ या दृढ़ता के सामने संसार की विशाल शक्तियों को भी नतमस्तक होना पड़ता है।

कहते हैं कि पार्वती जब बाल्यावस्था में ही थी, नारद ने हिमाचल तथा उनकी पत्नी से आ कर कहा था कि उनकी यह कन्या शिवजी से ब्याहने योग्य थी। पार्वती ने नारद के मुख से जब यह वाक्य सुना तो मन ही मन यह ठान लिया कि वह शिव जी से ही ब्याह करेगी। शिव जी को प्राप्त करने के लिए उसने घोर तपस्या आरम्भ कर दी। सूर्य की झलसने वाली धूप पार्वती को अपनी प्रतिज्ञा से हटा नहीं सकी। वृष्टि का जल मस्तक पर गिर कर चला जाता

परन्तु पार्वती तप में लीन अपनी जगह से हिल नहीं पाती। बन के पशु बन चर उस स्थान से शोर करते, उछलते कूदते निकल जाते, किन्तु वह दृढ़ प्रतिज्ञा वाली देवा, अपने स्थान से तनिक भी न टसकती।

पपीहा मन को न तजे, तजे तो तन बे काज।
तन छाड़े तो कुछ नहीं, मन छाड़े है लाज॥
पड़ा पपीहा सुरसुरी, लगा बधिक को बान।
मुख मोड़े सुर्त गगन में, निकस गयों सो प्रान॥
चत्रिक सुनहिं पढ़ावही, आन नीर मत ले।
मम कुल ऐहि रीति है, स्वाति बूंद चित्त दे॥
कबोर सीप समुद्र की, रटे पियास पियास।
और बूंद को न गहे, स्वाति बूंद की आस॥
ऊंची जात पपीहरा, पठे न नीचा नीर।
के सुरपति को जांचिए के दुःख सहे शरीर॥

दृष्टि के सामने शिव जी का आदर्श था इसलिए कि शोरी पार्वती दृढ़ प्रतिज्ञ हो गई। बहुत से ऋषि मुनि उसको बहकाने तथा उसकी तपस्या को भंग करने के लिए उसके पास आए। उन्होंने पार्वती की प्रशंसा करते हुए शिव जी का अपमान करना तथा उन्हें धिक्कारना शुरू कर दिया। परन्तु पार्वती पर इसका तनिक मात्र भी असर नहीं पड़ा। वह बोली, "मैं तो बस शम्भु की ही हूं, वह मेरे इष्ट, मेरे आदर्श, मेरे परम लक्ष्य हैं। मुझे तुम्हारी बेकार की बातें सुनने का अवकाश नहीं है। मैं अपने अराध्य को, अपने आदर्श को, क्षणमात्र के लिए भी दृष्टि के सामने से ओझल नहीं होने दे सकती। मेरा विवाह होगा तो शिव जी से ही होगा, वरना मैं सारा जीवन क्वारी बैठी रहूंगी।

प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियां, जो सात ऋषि कहलाती हैं पार्वती के इस हठ, इस दृढ़ता, इस श्रद्धा और गम्भीरता को देख कर चकित हो गईं और उन्होंने स्वयं जा कर शिव जी को पार्वती से ब्याह करने को बाध्य किया, और पत्थर के समान दृढ़ प्रतिज्ञा वाली पार्वती शिव जी के साथ ब्याही गई। हिम्मत क्या नहीं कर सकती! हिम्मत और दृढ़ संकल्प के सामने हिमालय जैसे विशाल पर्वत को भी सिर झुकाना पड़ता है।

उल्लुजमान दनिशमन्द जब करने पै आते हैं।
समुन्दर फाड़ते हैं, कोह से दरिया बहाते हैं॥

अर्थात् "जब वीर और उत्साही पुरुष किसी काम के करने के लिए तत्पर हो जाते हैं, तो वे अथाह सागर को मथ डालते हैं, और विकट पहाड़ों से नदी बहा देते हैं।

यह पार्वती का हठ या दृढ़ प्रतिज्ञा निःसन्देह प्रशंसनीय है। परन्तु क्या आपने कभी सोचा है कि पार्वती है कौन? शिव के वाम अंग में बैठने वाली उमा, पार्वती कहलाती हैं। वह सम्पूर्ण शक्तियों की देवी हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वह भी शिव जी की भांति तामसिक हैं। परन्तु हमारा तुम्हारा शरीर भी क्या है? उसमें भी तो तम की अधिकता है। वह मैल है, वह स्थूलता है, जिसको पार्वती ने अपने शरीर से निकाल, उससे हमारे और तुम्हारे जैसे असंख्य पुत्र बनाए हैं। इस कठोर लोह समान पार्वती के दो प्रकार के पुत्र हैं, गणेश और स्वामीकार्तिक। एक चूहे पर सवारी करता है और दूसरा मोर के पंख पर बैठता है। चूहे पर सवारी करने वाला गणेश अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी है, जो अपने वाहन की निर्बलता का विचार न करके, उससे अधिक से अधिक लाभ

उठाने की चेष्टा करता है। दूसरा देवताओं की सेना का सेनापति बना हुआ, हर प्रकार के स्वाभिमान और अपनी मनमानी चलाने के वशीभूत रहता है। इसका वाहन मोर है। ससार के समस्त मनुष्य जो शक्ति, बल पौरुष का घमण्ड रखते हैं केवल दो ही भागों में विभक्त हैं। एक भाग तो गणेश से और दूसरा सोमकार्तिक से सम्बन्ध रखता है। पार्वती ने अपने इस पुत्र को जो कि देवताओं के सेनापति होने का गर्व है श्रेष्ठ नहीं माना, परन्तु पुत्र गणेश को श्रेष्ठ माना,जो बुरी से बुरी वस्तु को अपने लाभ के रूप में परिणित करना जानता है। जिसमें पार्वती का धैर्य है जिसको माता का आशीर्वाद है। अब आप ही समझ लें कि जिसके अंग संग माता का आशीर्वाद हो, उसके लिए संसार में क्या दुर्लभ है :---

जन्नत की रज़ाय मादरानश्त।
अन्दर तहे पाय मादरानश्त॥

अर्थात् "माता को प्रसन्न रखने में वैकुण्ठ है और उसके चरणों के नीचे बेकुण्ठ है। अतः माता की सेवा और माता को प्रसन्न रखना मुख्य है।"

एक बार जब पार्वती नहा रहीं थी, उन्होंने गणेश को आज्ञा दी कि वह दरवाजे पर बठें और किसी को भी अन्दर न आने दें। संयोगवश शिव जी उसी समय आ गए। गणेश जी ने माता की आज्ञा के अनुसार उन्हें भी भीतर नहीं जाने दिया। शिव जी ने बहुत समझाया, परन्तु माता भक्त गणेश माने नहीं। दोनों में लड़ाई हो

गई और शिव जी ने गणेश का सिर धड़ से अलग कर दिया और भीतर घुस गए। जब पार्वती को अपने पुत्र के मरने का समाचार मिला, उनके हृदय में क्रोध की ज्वाला भभक उठी। पृथ्वी और आकाश पार्वती का क्रोध देख कर थर्रा गये। कौन है जो पार्वती के क्रोध का सामना कर सकता। अन्त में शिव जी महाराज ने हाथी का सिर लगा कर गणेश को फिर से जीवित कर दिया और दयालु माता नें इस बात पर देवताओं के अपराध को क्षमा कर दिया कि जब भी कोई पूजा पाठ की विधि हो, सबसे पहले गणश जी की पूजा की जाया करे। यह महान उपदेश है जो संसार में हमें सबसे पहले सीखना चाहिए कि जहां देवताओं के सरदार का इतना महत्त्व नहीं रखा गया, किन्तु एक सेवक को असली प्रतिष्ठा व नेतृत्व प्रदान किया गया।

सम्मान और प्रतिष्ठा चाहते हो, तो सच्चे सेवक बनो और सेवा करो। यदि आज्ञा का उलंघन करोगे, तो सदैव भाग्यहीन और निराश रहोगे।

वास्तविक शक्ति तलवार में नहीं, न सेना के सेनापति में है, असली शक्ति वास्तव में धीरता में है, काम में है। यह उपदेश हम पार्वती के दोनों पुत्रों से सीखते हैं।

परन्तु पार्वती क्या है ? क्यों उसकी इतनी महिमा है ? क्या कारण है कि पार्वती स्त्री जाति में इतनी माननीय है ? साधारण लोग तो यही कहेंगे कि पार्वती शिव जी की स्त्री है और अति पति उपासक है। यह सच है कि स्थूल रचना में शिव और पार्वती के सम्बन्ध का चित्र ऐसा ही है, परन्तु सूक्ष्म रचना में, जहां प्रकृति की महान शक्तियां सूक्ष्मता से काम करती हैं, वहां शिव और पार्वती पुरुष और प्रकृति कहलाते हैं। इनके संयोग से, जो वास्तव में नाम मात्र हैं,

प्रकार की सन्तान होती है जो गणेश और स्वामकार्तिक के नाम से प्रसिद्ध है। गणेश के आस पास सिद्धि शक्ति, स्त्रियों के रूप में हाथ बांधे खड़ी रहती हैं, परन्तु स्वामकार्तिक का कोई स्त्री सम्मान नहीं करती।

इस संसार में पार्वती का वास्तविक रूप शक्ति का है, और जितनी भी और शक्तियां हैं, चाहे वह अपने नाम और गुण के कारण कुछ भी क्यों न हों, पार्वती के निकट या उसके निज रूप में आ जाती हैं। यह शक्ति वास्तव में, काम करने में हैं जो धैर्य, गम्भीरता तथा दृढ़ता से काम करते हैं, उसको पार्वती के हाथ के स्रोत से हर प्रकार की सफलता के पदार्थ प्रदान होते जाते हैं।

सफलता किसी देश, जाति या धर्म से सम्बन्ध नहीं रखती। शिव पुराण में रक्त बीज राक्षस की लड़ाई से पहले पार्वती ने उससे कहा था, "मैं उसकी हूं जो मुझ पर अधिकार पा का भेद जानता हो। इन शब्दों में गूढ़ रहस्य है। पार्वती के दया भाव का अधिकारी केवल वह है, जो पर्वत के समान दृढ़ व गम्भीर हो और रातदिन अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगा रहता हो। पार्वती न किसी के रूप को देखती है, न रंग को, न जाति को न देश को। जो पार्वती के स्वभाव को ग्रहण करता है, वह उसी ही कीओर मुस्कराती है। जिस व्यक्ति की ओर पार्वती का ध्यान नहीं होता, उस पर लक्ष्मी और सरस्वती की भी दया नहीं होती, क्योंकि पार्वती का नाम न ही केवल संसार की स्त्रियों की सूचि उच्च वंशावली के हैं। संसार को तुम्हारी श्रेष्ठ वंशाकली

मैं सबसे पहले आता हैं, किन्तु देवताओं की स्त्रियों में भी सबसे पहले आता है। तुम ही सोचो यदि किसी में धैर्य व दृढ़ता नहीं है, तो वह सम्पत्ति और बुद्धि कैसे पा सकता है! लक्ष्मी भण्डार से सम्पत्ति लेने के लिए और सरस्वती भण्डार से विद्या लेने के लिए दृढ़ता और गम्भीरता को आवश्यकता है।

पार्वती चाहती है कि तुम में उत्साह हो, तुम साहसी और वीर बनो, परिस्थिति से लाभ उठाने की योग्यता प्राप्त करो और प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाने का उद्योग करो।

धन धान्य, मान, बड़ाई और सफलता की प्राप्ति के लिए, सबसे पहली शर्त यह है कि मनुष्य असम्भव और कठिन का विचार कभी भी मन में न आने दे। मन में यदि दृढ़ता और गम्भीरता है, तो तुम स्वयं अपने लिए उत्तम तथा अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न कर सकते हो। हमारे स्वर्गीय चाचा लाला प्रयागदत्त साहब कहा करते थे कि स्वार्थ का गुण हमको गोबर से सीखना चाहिए। गोबर पृथ्वी पर जब पड़ेगा, तब भूमि का कुछ न कुछ भाग वह अपने साथ अवश्य ही लायेगा। इसी प्रकार, जिन व्यक्तियों काम का विचार दृढ़ता से हृदय में जम जाता है, वे अवश्य किसी न किसी अंश तक सफलता प्राप्त कर ही लेते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यकता है केवल काम करने की, क्योंकि काम करने से सदैव मन में दृढ़ता और गम्भीरता रहती है।

की ओर ध्यान देने की फुरसत ही कहां है, तुम्हारे पूर्वजों की कहानियां सुनने की इच्छा ही कहां है ? सम्भव है तुम्हारे बाप दादा बहुत अच्छे वंश के रहे होंगे, किन्तु पार्वती इन सब को नहीं देखती। काम करने वाले तो केवल अप काम की ओर दृष्टि रखते हैं। वह लक्ष्मी से सम्पत्ति पाने के लिए आशीर्वाद नहीं मांगते, किन्तु पार्वती भण्डार से दृढ़ता और गम्भीरता का आशीर्वाद मांगते हैं। वे सरस्वती की स्तुति पढ़ कर विद्वान बनने के इच्छुक नहीं होते, परन्तु पार्वती की अटल दृढ़ता को पाकर परिश्रम तथा उद्योग से सरस्वती को अपना बना लेते हैं।

काम करने वालों को न तो किसी की शिकायत से प्रयोजन होता है न किसी की प्रशंसा से। काम की धुन में लगे रहने के कारण न तो ईर्ष्या करने वालों की ईर्ष्या का खटका, न शत्रु की शत्रुता का भय, न मित्र की सहिष्णुता का विचार, न शत्रु के उत्पात की चिन्ता रहती है। उनको फ़ज़ूल 2 बातों की ओर ध्यान देने की फुरसत ही नहीं होती, वह तो अपने काम में ही मस्त रहते हैं।

हमारे देश में अब आवश्यकता केवल इतनी है कि लोक पार्वती भण्डार से काम करने की शक्ति प्राप्त करें और अपनी विचार शक्ति की बर्बादी न करें।

पार्वती भण्डार कोई कल्पित वस्तु नहीं है, वह एक अस्तित्व है। तुम थोड़ा अपने हृदय को दृढ़ कर लो, तो फिर जितनी भी दृढ़ करने वाली शक्तियों के परमाणु हैं, स्वयं तुम्हारे हृदय की ओर आकर्षित होंगे और तुम में दृढ़ता आती जायेगी बोलो कम, काम अधिक करो। जो खेत में

एक मन के बदले सवा मन अन्न पैदा कर सकता है, वह उस मनुष्य से अच्छा है जो एक दो पुस्तकें लिख डालता है।

काम करने से क्या फल मिलता है, इसकी व्याख्या में अमेरिका के हबशियों की एक घटना आपको बताई जा रही है :--

सन् 1915 में 25 हबशी बन्दी हो कर अफ्रीका से अमेरिका में आए। वे दास थे, गुलाम थे। उन्हें विद्या प्राप्त करने का अवसर ही नहीं दिया जाता था। 1865 ईस्वी तक अमेरिका में हब्शियों की संख्या बढ़ते 2 चालीस लाख तक पहुंच गई। उस समय तक उनकी स्वतन्त्रता का ध्यान सभ्य देशों में तथा अमेरिका में भी उत्पन्न हुआ। बड़ी कठिनाइयों के बाद वे स्वतन्त्र कर दिए गए। परन्तु उनके लिए न कहीं पाठशालाएं थीं, न शिक्षक थे, न वकील थे, न डाक्टर थे, न महाजन थे, न साहूकार थे। अन्त में उनमें उन्नति का विचार उत्पन्न हुआ और वे काम में जुट गये। आज इस समय संयुक्त राज्य अमेरिका में उनकी जनसंख्या लगभग एक करोड़ है और लगातार परिश्रम करने के कारण वे दिन-प्रतिदिन उन्नति करते चले जा रहे हैं। उनके कितने कारखाने हैं, उनमें से कितने करोड़-पति हैं, कितने डाक्टर हैं, विद्वान हैं। कहा जाता है कि जापान के अतिरिक्त और किसी जाति ने ऐसी उन्नति नहीं की।

गंगा स्वयं पार्वती भण्डार की सामग्री का एक अंश है। जो लोग कुछ करना चाहते हैं वे निरर्थक बातों से हट कर पार्वती से अमृत की गंगा बहायें, और धीरता, दृढ़ता और

तत्परता का जीवन में संचार करें आपका जीवन सफल हो जायेगा।

ईश्वर आशीर्वाद दें कि हम पार्वती भण्डार से धैर्य, दृढ़ता और अटलता की दात प्राप्त करके काम में लगें, जिससे देश का उद्धार हो सके।

फ़कीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट सुतैहरी रोड, होशियारपुर को दिया धन आयकर अधिनियम की धारा80-जी के अन्तर्गत,आयकर आयुक्त के पत्र नं. ***JUDL TRUST 13999 dt. 31-12-91***, साल ***30-4-93-94*** तक आयकर से मुक्त है।

"मानवता धर्म" वर्तमान विश्व संकट का एकमात्र हल

हजूर परमदयाल पण्डित फ़क़ीर चन्द जी महाराज

मुझे तुमसे प्रेम है, परन्तु इस प्रेम के पीछे मेरा कोई निजी स्वार्थ नहीं है। मैं जानता हूं कि आप लोग ईश्वरीय प्रकाश की खोज में हो जिसकी प्राप्ति के लिए, मनुष्य के हृदय में स्वाभाविक जिज्ञासा होती है। लेकिन मनुष्य स्वयं बिना पथ प्रदर्शक के उसकी पूर्ति करने में असमर्थ होता है।

किसी समय मैं भी तुम्हारी जैसी दशा में था। इस खोज में प्रकृति या मौज मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल वर्मन एम. ए. के पवित्र चरणों में ले गई, जिन्होंने मुझे यह सच्चा मार्ग दिखलाया। जीवन भर परिश्रम करने के बाद मुझे यह ज्ञान हुआ कि जब तक कोई व्यक्ति अपने आपको न जान ले, तब तक वह जीवन के उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता। वास्तविक शक्ति जो मनुष्य को सुखी, शान्तिमय और समृद्धिशाली बनाती है, वह मनुष्य के अन्दर से ही आती है न कि बाहर से। चूंकि मनुष्य सूक्ष्म जगत् या ब्रह्माण्डी जगत् का अंश है, इसलिए

उसे एक ऐसे सत्पुरुष की संगत में रह कर, ऐसे महा सन्त के पास रह कर,जिसने कि स्वयं अपने निज रूप को पहचान लिया है, जान लिया है अपने निज स्वरूप को जान लेना चाहिए। पूरे विश्व में अशान्ति का साम्राज्य है। क्यों ? क्योंकि मनुष्य जाति, व्यक्तिगत रूप से, घरेलू रूप से, सत्गुरु (पूर्णविवेक) जैसे पथ प्रदर्शक के अभाव के कारण भटक रही है। गुरु नानक साहिब कहते हैं :—

जैसे चन्दा उगवे, सूरज चढ़े हज़ार।
ऐसे चानन हुंदियां, बिन गुरु घोर अंधियार॥

अर्थात्, "चाहे लाखों चन्द्रमा और सहस्रों सूर्य चमकें, तो भी बिन गुरु के (ज्ञान के) पृथ्वी पर भारी अन्धेरा छाया रहेगा।

राधास्वामी शिव दयाल जी महाराज कहते हैं, "संसार में घोर अन्धेरा छाया हुआ है और शरीर अज्ञान से भरा हुआ है !"

मनुष्य अपने - 2 वर्तमान और भूतपूर्व उपास्य देव गुरु और देवताओं में भिन्न 2 विश्वास के कारण, भिन्न 2 रूप से पूजा करते हैं। किन्तु क्या उनकी भक्ति और पूजा से उनको सुख और शान्ति मिलती है ? जहां तक मैंने अनुभव किया है कि भक्त साधारण मनुष्यों से भी अधिक दुःखी रहते हैं। क्यों ? ऐसा क्यों होता है ? मेरे विचारानुसार, उसका प्रत्यक्ष कारण यह है कि यद्यपि वे भक्त हैं, तथापि वे अध्यात्मिकता सम्बन्धी प्रकृति के नियमों से अनभिज्ञ हैं। वे बिना गुरु की सहायता के मार्ग ढूंढने

को कोशिश कर रहे हैं।

पूर्ण विवेक के अवतार सद्गुरु जैसे गुरुनानक, कबीर और राधास्वामी दयाल ने अपनी 2 राय बिना किसी संकोच, भय और समालोचना की चिन्ता किए बगैर प्रगट की। उन्होंने यह स्पष्ट तौर पर बता दिया कि बिना सत्गुरु के कोई भी व्यक्ति मुक्ति नहीं पा सकता।

धर्मावलम्बी ईश्वर, खुदा, राम, अल्लाह इत्यादि के साक्षात्कार करने या मुक्ति प्राप्त करने के लिए बहुत से साधन और उपाय करते हैं। मैंने स्वयं भी बहुत उपाय किए थे। परन्तु अपने अन्तर के पर्दों में प्रवेश करने के पश्चात्, मैं अनुभव के अन्तिम पद पर पहुंचा और अब मैं साहस और पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूं कि मनुश्य मात्र के समस्त कष्टों को दूर करने का उपाय सत्गुरु (पूर्णविवेक) के पास ही है।

मैं जानता हूं कि अधिकतर लोगों को रोचक कहानियां का सुनना पसन्द है। वह रोचकता से प्रभावित होते हैं या भय से। इस बात का भय कि यदि तुम यह बुरा काम करोगे तो तुम्हें नरक में जाना पड़ेगा या कष्ट सहन करने पड़ेंगे या मरते समय, गुरु तुम्हारी सहायता नहीं करेगा उन्हें भयभीत करता रहता है और इसी भय से वह गुरु बनाते हैं तथा गुरु की सेवा करने पर विवश होते हैं। बहुत ही कम लोग असलियत या सच्चाई जानने के इच्छुक हैं।

पदाधिकारी इस अहं भाव में, इस घमण्ड में रहते हैं

क्योंकि वे सामर्थ्यवान हैं, शक्तिशाली हैं, उनकी हर एक बात को माना जाना चाहिए, उनके विचारों का ही सब को समर्थन करना चाहिए ।

धर्मावलम्बी कट्टरवादी हो जाने के कारण, अपने संकीर्ण दायरे से बाहर जाने की कोशिश ही नहीं करते, केवल अपने ही धर्म, पन्थ या सम्प्रदाय में अन्ध-विश्वास रखते हैं। वे जानते ही नहीं कि दूसरे धर्मों व पन्थों में भी वही सत्यता विद्यमान है जो कि उनके धर्म या पन्थ में है फिर भी वे तंगदिल होते हैं।

मन बहुत ही चंचल है, वह किसी एक स्थान पर टिकता ही नहीं, उसमें हर समय तरह 2 के विचार उठते रहते हैं। वे लोग अपने विचारों को इधर उधर भटकने से रोक नहीं सकते और रोकने की अधिक कोशिश भी नहीं करते। अपनी इस कमी के कारण वह वास्तविकता या असलीयत को जान ही नहीं पाते और न ही कभी भविष्य में भी जान पाएंगे ।

यदि धर्म, मज़हब अथवा पन्थ ठीक हैं और सदैव ठीक ही थे, तो संसार में युद्ध तथा रक्तपात क्यों हुआ और लगातार क्यों होता जा रहा है ? क्या धर्म के ठेकेदारों ने कभी यह सोचा है कि क्या धर्म ने मनुष्य की कोई सहायता की, उसके कष्टों को दूर करने में सहयोग दिया ? नहीं, बिल्कुल ही नहीं की । क्यों ? क्योंकि न तो धर्माचार्य और न ही धर्म पर चलने वालों को इस बात पर विश्वास है कि सद्गुरु, ज़िन्दा, जीवित गुरु ही उनकी शंकाओं का निवारण करके उनको उचित मार्ग पर खड़ा कर सकता है। जिन का विश्वास ज़िन्दा गुरु में है भी, वे भी केवल गुरु के भौतिक

शरीर से ही सम्बन्ध रखते हैं, गुरु के भौतिक शरीर से ही सम्बन्ध रखते हैं, गुरु के भौतिन शरीर से ही मोह रखते हैं, उसी से ही प्यार करते हैं, गुरु की शिक्षा को ग्रहण करके उसके द्वारा बताए गए मार्ग पर नहीं चलते।

मैं आपको बिलकुल सच्ची बात बता रहा हूं कि विश्व में स्थायी शान्ति को कायम करने का एक मात्र उपाय यह है कि आम जनता जीवित सतगुरुओं की शरण में जाय, उनकी अनुयायी बने और उनकी शिक्षाओं को रोज़ के जीवन में प्रयोग करे। कोरी शिक्षा प्राप्त करने से भी कुछ नहीं होगा। विश्व में स्थायी शान्ति कायम करने के लिए, सर्व साधारण को आध्यात्मिक मार्ग पर लाने के लिए, पूरे विश्व की सरकारों को उच्च उद्देश्य की पूर्ति में जुट जाना पड़ेगा।

महात्मा गान्धी ने अहिंसा और सच्चाई पर कुछ अंश तक राजनैतिक क्षेत्र में और कुछ अंश तक धार्मिक क्षेत्र में वास्तविकता का मार्ग दिखाने का यथाशक्ति प्रयत्न किया। मालिक करे कि वह बीज, जो प्रकृति ने इस पृथ्वी पर महात्मा गान्धी द्वारा बोया है, वह बढ़े और पनपे। समस्त जाति और वर्ण के भिन्न 2 देशों के सन्तों की यथार्थ वाणी, असली गुरु हो सकती है। परन्तु अधिकतर लोग समझते नहीं कि असली गुरु है क्या। राजनीति में भी आध्यात्मिकता को अपनाना पड़ेगा। गुरु गोविन्द सिंह जी ने भविष्यवाणी की थी :---

"राज करेगा खालसा, आकी रहे न कोय।"

अर्थात्, "केवल खालसा (पवित्र पुरुष, उत्तम पुरुष, या

पाक इन्सान) ही शासन करेगा और उसका कोई विरोधी न होगा।" यहां खालसा का अर्थ सिक्ख जाति से नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति, जिसने सतगुरु (पूर्ण विवेक) को प्राप्त कर लिया है, वही खालसा है, चाहे वह भारतीय हो या रूसी, मिश्री हो या अमरीकी। वह व्यक्ति नानक, कबीर या किसी अन्य विशेष सन्त का अनुयायी हो या न हो, इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि सत्तगुरु शरीर ही नहीं, वह पूर्ण विवेक का नाम है, वह पूर्ण विवेक की शक्ति है।

सुनाम में जब मैं स्टेशन मास्टर था, तब परमतत्त्व के अवतार मेरे आदरणीय गुरु दाता दयाल जी महाराज ने मुझे एक दिन प्रवचन देने के पश्चात यह कहा था, "मैंने सन्तों, फ़कीरों तथा ऋषियों की शिक्षाशैली को, जो उन्होंने धर्मों की छाप लगाकर प्रगट किया था, बदल दिया है। परन्तु समय परिवर्तनशील है, हर क्षण बदलता ही रहता है। समय के परिवर्तन के साथ 2 मनुष्य बदलना पड़ता है, शैलियों में भी परिवर्तन होता रहता है। समय साथ - मेरी इस शैली को भी शायद बदलना होगा। इसलिए शरीर त्यागने पूर्व तुम शिक्षा की प्रणाली को बदल जाना और एक नया मार्ग बनाना जिस पर लोग चल सकें।" परन्तु उनेंने मुझे यह कभी नहीं बताया कि मुझे कैसे और किस प्रकार काय करना होगा। मैंने धीरे - 2 लगातार अभ्यास करने से बहुत कुछ सीखा। अब मुझे यह ज्ञान हो गया है कि मेरे निरीक्ष तथा अनुभव सन्तों के उजदेशों के अनुसार ही हैं। असलियत को मैं जान गया हूं।

वर्तमान समय की बेचैनी, दुःख, कष्ट, हिंसा और रक्तपात से प्रभावित हो कर, अपने ज्ञान तथा अनुभव के आधार पर मैं यह सब लिखने को विवश हो गया हूं।

जब मैं बंगलौर में था तो एक दिन स्वर्गीय पं. रामचन्द ने मुझ से कहा था कि दाता दयाल ने एक दिन अलीगढ़ में सत्संग देते हुए कहा था, "वह समय जल्द आ रहा है, जबकि परिस्थितियों के अनुसार, इस संसार की शक्तियां मजबूर होंगी कि सन्तों ही की शिक्षाओं को अपने - 2 विधि विधान में लागू करें।" मैं इसलिए राजनीति में भी अपने विचार सच्चाई तथा ईमानदारी से प्रगट करता हूं मुझे हिचकिचाहट नहीं होती।

आप इससे इस भ्रम में न पड़ें कि मैं कोई राजनीतिज्ञ हूं। नहीं कदापि नहीं। मैं कोरा अध्यात्मवादी भी नहीं हूं। मैं तो केवल इतना जानता हूं कि शारीरिक ढांचे के बिखरने के बाद मेरा अस्तित्व नष्ट हो जायेगा और मैं पूर्ण मे ही विलीन हो जाऊंगा।

यदि तुम सत्तगुरु (पूर्ण विवेक) के अनुयायी होने के लिए तत्पर हो, तो साधन व अभ्यास को अपने जीवन का अंग बना लो और सम्पूर्ण मनुष्य जाति के प्रति शान्ति और सद्भावना की दृढ़ इच्छा उत्पन्न करो।

वर्तमान समय में चुनावों में वोटरज़ योग्यता के आधार नहीं, बल्कि पार्टीवाज़ी या जिजि लाभ के आधार पर ही पर ही अपना वोट देते हैं। वह वोट अपनी जाति व पन्थ वालों को ही देते हैं। ऐसे चुने हुए सदस्य जन साधारण

का, पूरी मनुष्य जाति का कल्याण कैसे कर सकते है ? खड़े होने वाले प्रतिनिधि लोगों की सेवा करने के लिए नहीं, परन्तु धन, नाम, तथा प्रसिद्धि पाने के लिए ही राजनीति में आते हैं "यथा राजा तथा प्रजा" वाली कहावत तो आपने सुनी ही है। जैसे देश के नेता होते हैं, वैसे ही जनता होगी, आम लोग होंगे। मेरा विचार है कि सरकार अधिकारियों विशेषकर मन्त्री लोगों को सच्चे तथा पवित्र मनुष्य ही होने चाहियें, जो मनुष्य के सही अर्थ को समझने वाले हों और स्वयं भी सच्चे मनुष्य कहलाने के योग्य हों, जिनका शरीर, मन तथा आत्मा स्वस्थ हों जो ईमानदार तथा देश के प्रति प्रेम रखने वाले हों।

प्रकृति के नियमों के आधार पर जैसा कि मैंने समझा है, मुझे यह निश्चय हो गया है कि स्थायी शान्ति उस समय तकस्थापित नहीं हो सकती जब तक कि सरकारी मशीनरी में है मनुष्यमात्र के लिए प्रेम न हो। राजनैतिक क्षेत्र में शान्ति भंग करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करनी चाहिए कि नहीं, पुलिस व फ़ौज का प्रयोग करना चाहिए कि नहीं। मैं समझता हूं कि ऐसी स्थिति में अहिंसा के सिद्धान्त उपयोगी या लाभदायक नहीं हो सकते। ऐसी स्थिति में कानून तोड़ने वालों, सरकारी जयदाद को नष्ट करने वालों तथा शान्ति को भंग करने वालों को सख़्त से सख़्त सज़ा देना लाज़िमी है। यहां तक कि पुलिस तथा फ़ौज द्वारा जनता की शान्ति भंग करने वालों को रोकना घृणा या पाप नहीं समझ जाना चाहिए। जनता और देश की शान्ति को भंग करने वाले अत्याचारी हैं, हत्यारे हैं। उनकी निकृष्ट इच्छाओं और विचारों को पनपने से रोकना बहुत ही ज़रूरी है। सम्पूर्ण विश्व के देशों की सरकारें यदि अपनी

संकीर्णता, जाति, लिंग, रंग, राष्ट्र, धर्म की संकोर्णता को छोड़ कर यदि प्राणीमात्र के कल्याण के आदर्श को अपने सामने रख कर काम करें तो विश्व में सुख का साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

जब मैं कहता हूं कि विश्वमात्र के प्राणियों के सुख तथा कल्याण के लिए मनुष्य को जुट जाना चाहिए, तो इससे मेरा यह अभिप्राय नहीं कि उसको अपने राष्ट्र के हित के लिए कुछ नहीं करना चाहिए। अपनी जन्म भूमि, जिसने आपको जन्म दिया, आपकी रक्षा की, आपको पनपने दिया, उससे प्रेम न करना मूर्खता होगी, विश्वासघात होगा। परन्तु देश प्रेम के साथ ही साथ दूसरे राष्ट्रों के व्यक्तियों से शत्रुता, नफ़रत या द्वेष नहीं करना चाहिए। इन्सान को सबसे पहले एक सच्चा इन्सान ही बनना चाहिए। ऐसी अवस्था में ही, विश्व में स्थायी शान्ति स्थापना करने की सम्भावना हो सकती है, और कोई रास्ता मुझे तो नज़र नहीं आता।

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुःखिया हो

परमसन्त हजूर मानवदयाल जी महाराज

का

6 फरवरी 1992 को लक्ष्मी नारायण मन्दिर सिकन्द्राबाद, आंध्रप्रदेश में दिया गया सत्संग

तन धर सुखिया कोई न देखा,
जो देखा सो दुखिया हो।
उदय अस्त की बात कहत हैं,
सबका किया विवेका हो॥
घाटे बाढ़े सब जग दुखिया,
क्या गिरही वैरागी हो।
शुकदेव अचारज दुःख के डर से,
गर्भ से माया त्यागी हो॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया,
तपसी को दुःख दूना हो।
आशा तृष्णा सब को व्यापै,
कोई महल न सूना हो॥
सांच कहौं तो कोई न मानै,
झूठ कहा नहिं जाई हो।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया,
जिन यह राह चलाई हो ॥
अवधू दुखिया भूपति दुखिया,
रंक दुःखी विपरीति हो।
कहे कबीर सकल जग दुखिया,
सन्त सुखी मन जीती हो ॥

अखण्डमण्डलाकार व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं ये न, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
मस्तराम सुतं दवं, फ़कीरचन्दं पण्डितम् ।
परमसन्तं दयालं च, फ़कीर वन्दे जगद्गुरुम् ॥

राधास्वामी

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप सद्गुरु रूप उपस्थित भाइयो और बहनों!

आज 6 फरवरी को आप सिकन्द्राबाद में लक्ष्मी नारायन मन्दिर में सत्संग के लिए एकत्रित हुए हैं। सत्संग के लिए यह स्थान बहुत ही उपयुक्त हैं। परमदयाल जी महाराज भी शुरु 2 में इसी स्थान पर सत्संग दिया करते थे। मैंने आपके सामने जो मंगलाचरण रखा है, वह ऋषियों के अनुभवों का निचोड़ है। हमारे ऋषियों ने जगत् को छोड़कर, जगत् की इच्छाओं को छोड़कर, आबादी से दूर एकान्त आश्रमों में उस परमतत्व को खोजने की चेष्टा की, जो सर्वा.ार है। उन्होंने उस सर्वाधार पर चिन्तन किया। जब चिन्तन की पराकाष्ठा हो गयी और चिन्तन से कोई जवाब उपलब्ध न हुआ, तो उन्होंने ध्यान-मग्न होकर उस परमतत्व से नाता जोड़ा, जिसका प्रसार यह सारा जगत् है।

यह माया है, परन्तु पूरी तरह से इसे नकारा भी नहीं जा सकता, क्योंकि माया तो है, मगर माया किस की है ? माया उसी पारब्रह्म की है, जिसे सत्यम् कहा गया है। सतस्य सत्यम्---अर्थात् सत्य का सत्य केन्द्रस्य केन्द्रम अर्थात् केन्द्रों का केन्द्र है। वह परमतत्वाधार जो सारे जगत् का संचालक है, सारे जगत् की उत्पत्ति करने वाला, सृष्टि करने वाला, और फिर उसी जगत् को अपने में ही मिला देने वाला ब्रह्मा, विष्णु शिव के रूप में है। वही परम-तत्वाधार मानव के अन्तस्थन के अन्दर मौजूद है। इसी बात का अनुभव ऋषियों ने किया। हमारे ऋषियों ने अपने अनुभवों को महावाक्यों में, वेदों के मन्त्रों में व्यक्त किया। इसीलिए वेद मन्त्रों को श्रुति कहा जाता था। ऋषियों ने अनुभव से खब्द को सुना और शब्द सुनने के बाद उन्होंने सुने हुए शब्दों को पराशब्द की ब्वनि में व्यक्त किया। वेद ध्वनि एक दिव्य ध्वनि है। यह अगम की, परमतत्व की वही धारा है, जो वेदों के अन्तर वह रही है। इस धारा को ऋषियों ने अपने अनुभव के द्वारा सुना। कालान्तर में य ध्वनि-ध्वनि ही रह गयी। इस ध्वनि अथवा धारा के अन्दर जो मानव और ब्र का सम्बन्ध था, वह टूट सा गया। इसलिए ऋषियों ने कहा कि यदि आप वेद मन्त्रों का उच्चारण करना चाहते हैं, उनको समझना चाहते हैं, तो वेद के अंग हैं, जिन्हें वेदांग कहते हैं, उनका अध्ययन करो। इन वेदांगों के नाम हैं---शिक्षा, कल्प, द्वन्द, व्याकरण, निरुक्त और ज्योतिष। इनको शास्त्र भी कहते हैं। अब एक वेद मन्त्र को समझने के लिए आपको 6 शास्त्रों का ज्ञान होना आवश्यक है।

शिक्षा :---शिक्षा उस विज्ञान का नाम है, जो हमें

यह बताती है कि मन्त्र पढ़ते समय मन्त्र के हर शब्द के किस भाग पर जोर देना है और किस भाग पर नहीं देना है। अब यदि गायत्री मन्त्र को विधिवत पढ़ा जायेगा, तभी ही फायदा होगा।

छन्द :---हमारे जितने भी मन्त्र हैं, वह छन्द-बद्ध हैं। हर छन्द को गाने का लहजा अलग 2 होता है। संगीत यालिक से मिला देने वाला है, अर्थात् संगीत के माध्यम से मालिक को मिला जा सकता है। संगीत का अर्थ है मालिक के साथ रहकर गीत गाना। संगीत का ज्ञान हमारे ऋषियों को था। यदि आप मन्त्रों का उच्चारण छन्दों में करेंगे, तो आपको उस से प्रकाश का भी अनुभव होगा। यदि आप गायत्री मन्घ को स्वर लय के साथ जाप करें, तो आप आंधी तूफ़ान और गिरती हुई बर्फ को भी रोक सकते हैं। अमेरिका में जीन डिक्सन नाम की एक बड़ी विख्यात सिद्धि प्राप्त महिला हैं। इस महिला ने अमेरिका के राष्ट्रपति कैनेडी के मरने से पहले ही कैनेडी की मृत्यु के बारे में बता दिया था। मैंने जीन डिक्सन को कहा कि "जीन तुम नाम तथा प्रसिद्धि की तरफ मत जाओ, बल्कि मालिक की तरफ लगो। तुम्हें गायघी मन्त्र की सिद्धि है। यदि तुम गायत्री मन्त्र को छन्द में उच्चारण करके अनुष्ठान करोगी, तो तुम्हें और अधिक फ़ायदा होगा। लेकिन गायत्री मन्त्र का उच्चारण करने वाले को अनुशासन में ही रहना चाहिए।

कल्प ---कल्प क्या है ? कल्प है विश्व का इतिहास। ब्रह्मा का एक कल्प करोड़ों अरबों वर्षों के बाद होता है।

लोग कहते हैं कि भारत का इतिहास नहीं है। भई हमारा इतिहास तो सितारों के अन्दर लिखा हुआ है, विश्व के अन्दर लिखा हुआ है। इसलिए जब तक तुम विश्व के इतिहास को अर्थात् कल्प को नहीं जानते, तब तक तुम वेदों को नहीं समझ सकते।

व्याकरण :---यदि आप व्याकरण के अनुसार वेद मन्त्रों का अध्ययन करेंगे, तब आपको वेदों का ज्ञान होगा।

निरूक्त :---जो कुछ कहा जाता है,बोला जाता है,उसके कई अर्थ होते हैं। वेदों में जो देव शब्द आया,प्रजापति शब्द आया, उसके कई अर्थ हैं। अब प्रजापति शब्द का क्या अर्थ है? इसकी व्याख्या ब्राह्मण ग्रन्थों में दी गयी है। लोग समझते हैं कि प्रजापति चार मुख वाला ब्रह्मा है, जबकि यह केवल कल्पना है। प्रजापति तत्व क्या है? वह सर्वाधार है। सर्वाधार की पहली अभिव्यक्ति है। वह हर वस्तु के गर्भ के अन्दर केन्द्र के अन्दर मौजूद है। हर तत्व के अन्दर, हर अणु के अंश के अन्दर मौजूद है। वह अविनाशीतत्व गुरु पैदा नहीं होता, किन्तु अनेक रूपों में उसकी अभिव्यक्ति होती है। ऋषि एवं विद्वान ही उसके साँचे को समझ सकते हैं। जगत् के जितने भी स्तर हैं भूर, भुब: स्व:, महा, जना, तपा, सत्यम् इनको सन्तमत वाले भी मानते हैं। अनेक कमल हैं। पद में कमल गणेश निवासा। मूलाधार, सवाधिष्ठान, मणीपुर, विशुद्ध चक्र, अनाहद चक्र, आदया शक्ति,शिव नेत्र--यह सब दर्जे हैं,जो हमारे अन्दर भी हैं ओर बाहर भी हैं। यदि हम आज्ञा चक्र से चलें तो सहस्रदल कंवल, ज्योति निराकार, त्रिकुटी जो ब्रह्म, विष्णु और शिव का स्थान है अनुभव करेंगे। सुन्न में द्वैत है। महासुन्न

में अद्वैत है। भँवरगुफा में सोहमं का अनुभव होता है। सत्यलोक में प्रकाश का अनुभव होता है तथा गुरु का प्रकाशमय स्वरूप व शब्द का अनुभव होता है, लेकिन सत्लोक के आगे भी दर्जे हैं। जहां पर पहुंचने के बाद वापस आने की ज़रूरत नहीं रहती।

यत्र भन भान्सते सूर्य न शशांक।
तत् धामम् परमम मम:

भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा, "अर्जुन! जहाँ पर सूर्य नहीं चमकता, चांद नही होता, वह मेरा परमधाम है। यहाँ पर जाने के बाद फिर वापस नहीं आते।" सत्लोक के बाद अलख, अगम, अनामी के दर्जे। यह सभी 15 दर्जे हैं और प्रजापति उनका अंश है। वेदों का वास्तविक लक्ष्य यह है कि उसको अनुभव किया जाये। मैं आपको बता रहा था कि हमारे ऋषियों ने बैठकर तपस्या की, ध्यान लगाया और जो कुछ भी अनुभव किया, उसको वाक्यों में लिख दिया। अगर आप उन वाक्यों पर अमल करोगे, तो आपको अनुभव होगा और अविनाशी तत्व का भी ज्ञान होगा। इसलिए ऋषियों ने जो उपनिषदों के अन्दर वाक्य कह दिये, उनको महावाक्य कहा गया। ईशोपनिषद के अन्दर एक महावाक्य बताया गया कि ईश्वर कहां पर रहता है। कण २ के अन्दर ईश की उपस्थिति है। लेकिन उस उपनिषद के पहले एक मंगलाचरण लिखा गया।

पूर्णमद: पूर्णमिदं, पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते॥

वह परात्पर ब्रह्म, परमदयाल, परमपुरुष, अनामी-पुरुष, राधास्वामी जो कुछ भी कहना है कह दो, इसमें कोई

फ़र्क नहीं पड़ता है। वह अपने आप में पूर्ण है, उसमें कोई कमी नहीं है। पूर्णमदः पूर्णमिदं मानव भी अपने आप में पूर्ण है इसीलिए परमदयाल जी महाराज ने मानवदयाल नाम दे दिया। उन्होंने कहा "तुम मानव हो। क्योंकि पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते पूर्ण से पदा हुआ है। भाई, पूर्ण का बेटा पूर्ण ही तो होगा। पूर्णस्य पूर्णमादाय यदि तुम इस पूर्ण को जान लोगे, तो उस पूर्ण को भी अर्थात् मालिक को भी जान जाओगे। पूर्णमेवावशिष्शयते उस पूर्ण का भी ज्ञान हो जायेगा। इसलिए बाहरी गुरु का क्या कर्त्तव्य है? बाहरी गुरु का फर्ज है कि तुम्हारे अन्तर, मन में उस अविनाशीतत्व को जगा करके, तुम्हें यह अनुभव करा दे कि जो कुछ जगत् के अन्दर, जड़ चेतन के अन्दर मौजूद है, वह सब तुम्हारे अन्दर भी मौजूद है। तुम वही अविनाशी हो। ऐसा अनुभव, ऐसा ज्ञान, ऐसी समझ जो गुरु देता है, उस गुरु को नमस्कार है।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

जितने मंडल हैं, इन मंडलों के पीछे जो अखण्ड है, अविनाशी तत्व है, जो चर अचर के अन्दर मौजूद है, इस बात का जो गुरु अनुभव करा दे, उसको नमस्कार है। आज का जो शब्द पढ़ा गया है उनमें वेदों उपनिषदों का भी निचोड़ है और सन्तों का अनुभव भी उसी के अन्दर मौजूद है। अगर उसको समझ लिया जाये, तो में आपको दावे से कह सकता हूं कि सनातन धर्म और सन्तमत एक ही है। शब्द की व्याख्या से पहले मैं आपको उपनिषद की एक और बात

बताना चाहता हूं। ईशोपनिषद में क्या कहा गया है ?

ईशावास्यम इदम् सर्वम् यद् किंचित जगत्याम जगत्

सारे जगत् के अन्दर ईश मौजूद है। जड़ चेतन के अन्दर ईशावास्य है अर्थात् उसकी मौजूदगी है।

तेन तक्तेन भुन्जीथा। तो जीवन कैसे व्यतीत किया जाये ? जगत् में आनन्द भोगो लेकिन त्यागभाव से। यह आशय इस मन्त्र का है। यदि तुम इस आनन्द में आसक्त हो गए,तो तुम्हें लाखों करोड़ों बार फिर 2जन्म लेना पड़ेगा। इसलिए आनन्द भोगों, लेकिन त्यागभाव से। मार्गधा तस्य चित् धनम, किसी दूसरे के हक को मत मारो। यही ज़िन्दगी का राज़ है। इसी राज़ को कबीर साहव ने बताया है कि अगर तुम मालिक के साथ जुड़े हुए हो, तो तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहेगी।

तनधर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।
उदय अस्त की बात कहत हैं, सबका किया विवेका हो।

कबीर साहब परमतत्त्व के अवतार थे। उन्होंने सनातन धर्म की रक्षा की है। वह कहते हैं कि इस जगत् में जिसने भी शरीर धारण किया है, उसे कोई न कोई दु:ख लगा रहता है। परमतत्व भी जब मनुष्य चोले में आता है, तो वह भी सुख दु:ख को साथ लेकर आता है। जो लोग धोखा दे रहे हैं, चार सौ बीसी कर रहे हैं, वह कभी सुखी नहीं हो सकते। धनवान लोग अधिक दु:खी हैं और यदि ज़रूरत से ज्यादा धन हो, तो वह और भी ग़लत बात है।

अमेरिका में मनुष्य के आराम के लिए नये नये साधनों का अविष्कार किया जाता है। जितनी सुख सुविधाएं अमेरिका में हैं, उतनी कहीं और नहीं है। लेकिन फिर भी वहां पर मानसिक शान्ति नहीं है। अमेरिका में मानसिक रोगी इतने अधिक हैं कि मानसिक चिकित्सक के पास समय नहीं होता। अब भारत में भी बहुत मानसिक रोग हो रहे हैं। लोगों के पास पैसा भी है, मगर फिर भी वे अशान्त इसलिए कबीर साहब ने कहा है :---

तनधर सुखिया कोई न देखा,
जो देखा सो दुखिया हो।
उद्रय अस्त की बात कहत हैं,
सबका किया विवेका हो।

सद्गुरु भी अपने साथ सुख दुःख लेकर आता है, आपको बताने के लिए कि जगत् में सुख दुःख तो हैं ही, मगर हमारा आपा इनसे अलग है। यह भी प्रकृति का नियम है कि जो चढ़ता है, वह गिरता भी है।

घाटे नाढ़े सब जग दुखिया,
क्या गिरही बैरागी हो।
शुकदेव अचारज दुःख के डर से,
गर्भ से माया त्यागी हो।

जीवन में उतार चढ़ाव तो सब पर आता है। हर उतार के बाद चढ़ाव और चढ़ाव के बाद उतार आता है।

हरकमाले बाजवाल हर जवाले बाकमाल

गृहस्थी को तो परेशानी ही परेशानी है। कभी कोई

बीमार, तो कभी कोई बीमार। गृहस्थी समस्याओं से घिरा ही रहता है, लेकिन वैरागी भी दुःखी होता है क्योंकि वैराग्य में भी कोई न कोई इच्छा अधूरी रह जाती है। जब तक वैरागी पूरी तरह से आशातीत नहीं होता, तब तक उसे आन्तरिक शान्ति, सुख नहीं मिलता। संसार में दुःख तो है ही, लेकिन उस दुःख से घबराना नहीं है, क्योंकि दुःख के पीछे सुख और दुःख सुख के पीछे परमसुख जुड़ा हुआ है। इसलिए दुःख से घबराना नहीं है। कबीर साहब ने एक पंक्ति में शुकदेव जी के विषय में संकेत दिया है। यह एक पौराणिक कथा है। शुकदेव जी व्यास जी के पुत्र थे। जब वह अपनी माता के गर्भ में थे, तभी उन्हें ज्ञान था। वह माता के गर्भ से बाहर नहीं आना चाहते थे। बारह वर्ष तक मां के पेट में ही रहे। एक दिन व्यास जी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि "महाराज! आपको जन्म लेना है, कृपा करके बाहर आइए।" शुकदेव जी ने कहा, "मेरी एक शर्त है कि मैं पैदा होते ही जंगल में चला जाऊंगा, क्योंकि मैं माया में फंसना नहीं चाहता।" व्यास जी ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। शुकदेव जी पैदा होते ही जंगल में चले गए। आखिर में शुकदेव जी को ज्ञान अपने पिता से ही प्राप्त हुआ। लेकिन सबसे ऊंचा ज्ञान उन्हें राजा जनक से ही प्राप्त हुआ जो गृहस्थी थे।

जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुःख दूना हो।
आशा तृष्णा सब को व्यापे, कोई महल न सूना हो॥

योगी भी दुःखी है चाहे वह किसी भी प्रकार का योग क्यों न करता हो। चाहे वह हठयोगी है, चाहे ज्ञान योगी

है, चाहे कुण्डलनी योग करता है, मगर सभी दुःखी हैं। उसे पूर्ण शान्ति नहीं मिलती क्योंकि वह सिद्धि शक्ति में फंसे रह जाते हैं। 'जंगम दुखिया'। जंगलों में घूमने वाले लोग, जो लोगों को आशीर्वाद देते फिरते हैं, वह भी दुःखी हैं। 'तपसी को दुःख दूना हो'। अब तपस्या करने से सिद्धि शक्ति आ जाती है। तपसी को एक तो घोर तपस्या का कष्ट, दूसरे तपस्या के बाद जो सिद्धि शक्ति आती है, उसका कष्ट। जब तक तपसी के अन्दर आशा मौजूद है, किसी वस्तु की तृष्णा मौजूद है, तब तक उसको दुःख रहेगा, शान्ति नहीं मिल सकती। इस बात का अनुभव महात्मा बुद्ध ने किया और राजा भर्तृहरि ने किया। कहते हैं कि भर्तृहरि अब भी शरीर में मौजूद हैं। राजा भर्तृहरि बड़े प्रभावशाली व सम्पन्न राजा थे। उनका गृहस्थ जीवन बहुत ऐशो आराम का था। वह अपनी पत्नी से बहुत ही प्यार करते थे। उन्होंने भामिनी विलास लिखा, जिसमें उन्होंने पति-पत्नी का शारीरिक सम्बन्ध कैसा होता है ?

बड़े सुन्दर तरीके से वर्णन किया और उसके साथ ही साथ लोगों को सुखी जीवन व्यतीत करने की नीति भी बताई। भरथरीहरी कहते हैं :---

निदन्त नीति निपुणा सवन्तु।
न्याया प्रसाद पदमधीरा ।

"विद्वानपुरुष, धीर पुरुष वह है, जो सच्चाई के पथ से एक कदम भी पीछे नहीं हटता। चाहे लोग तुम्हारी निंदा करें, मगर तुम सच्चाई पर चलते रहो।"

यदि वास्तु वन्तु लक्ष्मी समाविष्यते कच्छप युतेक्षणां

"पैसा आये या चला जाये, चाहे मृत्यु आ जाये, मगर इस बात की परवाह न करते हुए न्याय न प्रथा न पदम्
"सच्चाई के मार्ग से धीर पुरुष एक कदम भी पीछे नहीं हटता।"

जब उन्होंने यह शतक लिख डाले और बड़े आनन्द से जीवन व्यतीत हो रहा था, तो उनके राज्य में एक ब्राह्मण ने अनुष्ठान किया। अनुष्ठान के बाद उसे अमृत फल प्राप्त हुआ। वह अमृतफल ब्राह्मण ने राजा को दे दिया। अब राजा को अपनी पत्नी से सच्चा प्रेम था। उन्होंने सोचा अगर मेरी पत्नी अमर हो जाये, तो बहुत अच्छा रहेगा। अपनी फर राजा ने अमरफल स्वयं न खा कर उसे, करती थी। जब दे दिया। महारानी किसी धोबी से प्यार को दे दिया। धोबी आया तो महारानी ने वह फल धोबी वह फल उस वेश्या को दे दिया। वेश्या ने सोचा "मेरा जीवन तो अच्छा नहीं है, मैं अमर होकर क्या करूंगी। यदि इस फल को मैं अपने राजा को दे दूं तो बहुत अच्छा रहेगा। हमारा राजा तो बहुत ही अच्छा है। जब वेश्या नृत्य करने के लिए दरबार में गयी, तो उसने नाचते २ अमृतफल राजा को दे दिया। राजा फल को देखकर चौंक पड़े और उन्होंने पूछा, "तूने यह फल कहां से प्राप्त किया।" वेश्या ने कहा, "महाराज मुझे धोबी ने दिया।" धोबी को बुलाया गया और उससे पूछा गया। धोबी ने कहा, "महाराज ! यह फल मुझे महारानी जी ने दिया।" यह बात सुनकर राजा को उसी समय वैराग्य आ गया। उन्होंने कहा याम चिन्तयानी सत तम मैसा विरक्ता अर्थात्, "जिसकी मैं लगातार चिन्ता कर रहा हूं प्यार कर रहा हूं,

वह मेरे से विरक्त है। शापयन्त इच्छति जनम सालोक्य सकता वह किसी दूसरे को चाह रही है। वह मूर्ख धोबी महारानी का प्यार पाकर किसी और को चाहता है।

अस्मियते परिलष्यति कायन्या हम पर कोई और ही निहाल हो रही है। धिक् तान्च तान्च मदनन्च इमांच मान्च वेश्या को धिक्कार है, धोबी को धिक्कार है, कामदेव को धिक्कार है, और मुझे भी धिक्कार है। जगत् से अलग हो जाओ। इस जगत् के अन्दर कोई भी वस्तु नहीं, जिसके साथ प्यार करके तुम सुखी रह सको। उन्होंने वैराग्य शतक में लिखा है।

आशा नाम नदी:---मनोरथ जला: तृष्णा तरंगाकुला,
मोहावर्त्त सअस्तरा अति गहना:। दुकूल चिन्ता तटी,
तस्या पारगता विशुरूमनसानन्दन्ति योगीश्वरा:॥

आशारूपी नदी है और सब उसके अन्दर बहे जा रहे हैं। 'मनोरथ जल' अर्थात् उस नदी के अन्दर इच्छारूपी जल है तृष्णा है। तृष्णा यह है। कि मेरे बेटा हो जाय, कार आ जाये, कोठी बन जाये। अब जो गुरु है या सन्यासी हैं, वे सोचते हैं कि मेरे इतने चेले हो जायें। मोह रूपी चक्र है। यह आशा रूपी नदी बहुत गहरी है। उसके चिन्ता रूपी किनारे हैं। सन्त लोग आशाओं के पार चले जाते हैं और परमानन्द को प्राप्त होते हैं।

सांच कहो तो कोई न माने झूठ कहा नहीं जाई हो।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया जिन यह राह चलाई हो॥

कबीर साहब अपनी मस्ती में कह रहे हैं। वह तो

मालिक के अन्दर ओत-प्रोत थे। कबीर साहब कहते हैं कि यदि सच कहूं तो किसी को भी अच्छा नहीं लगता और झूठ कहा नहीं जायेगा। जब परमतत्व मालिक मनुष्य के चोले में आता है, तो उसके अन्दर करूणा भी होती है और दया भी होती है, वह झूठ कैसे बोल सकता है ? जिससे प्यार किया जाता है, उससे झूठ नहीं बोला जाता।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया जिन यह राह चलाई हो।

ब्रह्मा को सृष्टि की चिन्ता लगी रहती है। विष्णु को उसके पालन पोषण की चिन्ता रहती है। शिव को चिन्ता है कि वह सब को मोक्ष में भेजते रहें। इन तीनों के बिना जगत् चल नहीं सकता।जब तक प्रलय नहीं होती, तब तक इन तीनों को भी मोक्ष नहीं मिल सकता।

अवधू दुखिया भूपति दुखिया, रंग दुखी विपरीति हो।
कहें कबीर सकल जग दुखिया सन्त सुखी मन जीती हो॥

अवधू वह होता है, जो दुखिया में किसी की भी चिंता नहीं करता और मालिक में ही मिला रहता है। भूपति दुखिया अर्थात् राजा महाराजा भी दुःखी हैं। उन्हें अपने राज्य की चिन्ता है। वह भी दुःखी हैं, जो दुनिया से विमुख हो गये हैं।

कहें कबीर सकल जग दुखिया सन्त सुखी मन जीती हो।

जगत् का मतलब है, जो चल रहा है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव इस जगत् को चला रहे हैं। लेकिन जगत् के अन्दर सभी दुःखी हैं। कबीर साहब कहते हैं कि इस संसार में एक सन्त ही ऐसा है, जो सुखी है क्योंकि जिसने अपने मन को

जीत लिया है और मालिक के साथ मिल गया है। मन को कब जीता जाता है, जब हमारा मन मालिक के साथ जुड़ जाता है, अर्थात् भक्ति में ओत-प्रोत हो जाता है और इस जगत में फंसता नहीं है। यह मार्ग पराभक्ति का, पराप्रेम का मार्ग है। इस मार्ग में त्याग नहीं किया जाता बल्कि गृहण किया जाता है। जब तुम अपने इष्ट से प्यार करोगे, तो वह तो परमतत्व है, तुम्हें किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। इसलिए अपने इष्ट को पूर्ण मानो, उसे परमतत्व मानो, तब तुम्हारा ध्यान दुनिया की चीजों की तरफ नहीं जायेगा और तुम मस्ती में रहोगे। तुम्हारा दोपना समाप्त हो जायेगा।

जब मैं था तब तू नहीं
जब तू है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी
वा में दो न समाहिं॥

वहां पर दो नहीं रहते। बाद में एक भी नहीं रहता। सद्गुरु के चेहरे पर ध्यान लगाने से काम बन जाता है। उसके गुण तुम्हारे अन्दर आ जाते हैं। प्रेम के रास्ते से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। न तपस्या करने की जरूरत न किसी कर्मकाण्ड करने की जरूरत। जब तुम्हारा अगाध प्रेम है, तो बाकी सब चीजें गौण हो जाती हैं।

कहें कबीर सकल जग दुखिया,
सन्त सुखी मन जीती हो।

हार में जीत है और जीत में हार है। यदि आपने मन को हरा दिया, तो आप जीत गए। अब मैं आपको

सच्चे दिल से सद्भावना देता हूं कि आप धीरे 2 इस मार्ग पर चलते हुए अपने मन को जीतें। मन को तब तक नहीं जीत सकते जब तक आप शरणागत नहीं होते। मैं चाहता हूं कि आप सबको सुख, आनन्द, समृद्धि और शान्ति मिले। इस शब्दों के साथ मैं आज का सत्संग समाप्त करता हूं। सबको राधास्वामी।

मासिक सन्देश

सत्संग परमसन्त सद्गुरु हजूर मानव दयाल

डा. आई. सी. शर्मा जी महाराज

मेरी अपनी ही आत्मा के अंश,
मेरे परमप्रिय सत्संगियो ।
राधास्वामी, परमदयाल जी सहाई।

पिछले मासिक सन्देश में मैंने आपको सूचना दी थी कि 25 अक्टूबर को मैं पोर्ट आफ स्पेन से दुपहर बोस्टन हवाई अड्डे पर पहुंच गया। यहां पर श्री बी. भटनागर तथा उनके सुपुत्र डा. राहुल भटनागर स्वागत के लिए मौजूद थे। हम एक घन्टे में डा. भटनागर के घर पर नाशुआ, न्यूहैम्पशायर पहुंच गए। मैं यहां पर 3 दिन रहा। पहले दिन ही डा. भटनागर के घर पर सत्संग हुआ, जिसमें डा. मुकुल तथा सुधा भटनागर के परिवार और चित्रा भटनागर के इलावा और सत्संगी भी सम्मिलित हुए। दूसरे दिन श्री जगदीश भटनागर के घर पर सायंकाल का भोजन और पारिवारिक सत्संग हुआ। मुकुल के छोटे भाई डा.

राजू भटनागर ने भी श्रद्धापूर्वक सत्संग सुना और अपनी शंका का निवारण किया। 28 अक्टूबर को मैं बोस्टन से सैनफ्रान्सिसको पहुंचा। वहां श्री विनोद शर्मा एक अमेरिकन सत्संगी के साथ हवाई अड्डे पर मौजूद थे। हम करीब 2 घन्टे में हरकुलिस में विनोद शर्मा के घर पहुंच गए उसी दिन सायंकाल विनोद शर्मा के घर पर पारिवारिक सत्संग हुआ, जिसमें रेनो से आए हुए भारतीय सत्संगी भी सम्मिलित हुए। विनोद शर्मा एवं उनकी पत्नी कुसुम शर्मा तथा कुसुम के भाई भारतभूषण हरकुलिस में लूपाइन मार्ग पर एक बहुत ही सुन्दर और बड़े भवन में रहते हैं। उनका यह मकान पहाड़ी की चोटी पर है। मैं प्रातः काल हमेशा उनके मकान से भी ऊपर बहुत सुन्दर सड़क पर 2 मील तक जाया करता था। इस बार भी मैं 29 अक्टूबर को उसी सड़क पर २ मील तक पैदल चला। जो सफाई और सुन्दरता सड़क के दोनों ओर बने हुए भवनों में है, वह देखते ही बनती है। भारत को पश्चिम की यह सफाई और सुन्दरता सीखनी चाहिए।

घूमने के पश्चात् और नाश्ता करने के पश्चात् विनोद शर्मा मुझे अपने वीडियोस्टोर में ले गए, जो उनके घर से 5 मील की दूरी पर है। करीब 3 वर्ष पूर्व उन्होंने श्रद्धापूर्वक आशीर्वाद प्राप्त करके स्टोर को एक अमेरिकन से खरीदा था। अब इस स्टोर पर अंग्रेजी फिल्मों के अतिरिक्त भारतीय वीडियो भी उपलब्ध हैं। बहुत से अमेरिकन ग्राहक भारतीय फिल्मों को पसन्द करते हैं। रामायण तथा महाभारत जैसे वीडियो फिल्मों को देखने से भारतीय संस्कृति का विदेशी लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। उसी दिन सायंकाल 6 बजे हरकुलिस से करीब 40 मील दूर कैलिफोर्निया के नोवाटो शहर में श्री विलियम कोम्बी के निवास-

स्थान पर सत्संग आयोजित था। विलियम तथा उनकी कोम्बी, सन्तलाल सिंह की परम्परा से सम्बन्ध रखते हुए भी कई वर्षों से मानवता मंदिर से सम्बन्धित हैं। पिछले वर्ष भी इनके निवास स्थान पर सत्संग हुआ था। इन सत्संगों में सम्मिलित होने वाले करीब 30 अमेरिकन सत्संगी राधास्वामी मत के विभिन्न सम्प्रदायों से सम्बन्धित है। यह सभी मेरे सत्संगों से बहुत प्रभावित हैं हर सत्संग के अन्त में समाधि ध्यान का अभ्यास किया जाता है। मैंने पहले भी मानवमन्दिर में यह विचार अभिव्यक्त किया है कि गुरु एक होता है और उसे पूर्ण मानते हुए सभी सम्प्रदायों के सत्संगियों को परस्पर मिलकर रहना चाहिए। जहाँ पर सच्चा सत्संग प्राप्त हो और विशेषकर राधास्वामी सत्संग मिले,सभी सत्संगियों को उससे पूरा लाभ उठाना चाहिए। राधास्वामी मत सनातन धर्म के विकास में अन्तिम सीढ़ी है, इसलिए वह किसी मत का खण्डन नहीं करती, बल्कि हरएक मार्ग का स्पष्टीकरण करती है। राधास्वामी मत के व्यास महर्षि शिवव्रत लाल जो वर्मन को रायसालिगराम जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि वह राधास्वामी मत का अपने लेखों और सत्संगों द्वारा प्रचार करें। परमसन्त सावनसिंह जी महाराज भी महर्षि जी को ब्यास में सत्संग देने को बुलाया करते थे। यही परस्पर प्रेम और सहयोग का सम्बन्ध परमसन्त पंडित फकीरचन्द जी महाराज और हजूर सावनसिंह जी महाराज में था। इस आदान प्रदान से राधास्वामी मत का निखार हो रहा था और सम्भवतया जो राधास्वामी मत सहज में हरएक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के जीवन मुक्ति की की अवस्था दिलासकता था वह कम से कम राधास्वामी मत के सभी सम्प्रदाओं को एक सूत्र में बांध देता।

अब भी समय है कि राधास्वामी मत के सभी सम्प्रदाय

सच्चाई पर चलकर परस्पर सहयोग से सहज सुरत शब्दयोग को विश्वव्यापी बना सकते हैं। महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने, जिन्हें दातादयाल कहा जाता है, सन्त मत की इस बारीकी को बताते हुए लिखा है :---

सन्तमत मारग झीना है ॥
त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे, फिर कारन की बारी।
कारन तज महाकारन धावे, तब समझो अधिकारी ॥
धरमकरम त्यौहार न छोड़ो, ढूढ़े सार न इनमें।
सुरत शब्द में सार छुपा है, करे प्राप्त सो तिन में ॥
संजम नियम जप तप कर्मा, नहीं किंचित कठिनाई।
सहज योग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई ॥
सतगुरु सत् नाम सतसंगत, समझ सहज में धारे।
फिर अन्तर में करे चढ़ाई, जड़ चेतन निखारे ॥
राधास्वामी ने भेद बताया, सुरत शब्द मत गाया।
सुरत शब्द मत सबका टीका, सुरत में शब्द को पाया।

यहां पर राधास्वामी सतगुरु का अर्थ कोई व्यक्ति विशेष नहीं है, बल्कि हर युग में और हर समय किसी भी मानव चोले में आए हुए, उसी परम पुरुष का व्यक्तित्व है, जो दुखी जीवों को परमधाम ले जाने के लिए स्वयं राधास्वामी अवस्था में रहता हुआ, जिज्ञासुओं को सत्संग द्वारा जीवन मुक्त अवस्था में ले जाता है। जिस भेद को वह सतगुरु खोलता है, उससे यह प्रमाणित हो जाता है कि वह अपने अनुभव के आधार पर जीवनमुक्त अवस्था में रहता, हुआ, यह स्पष्ट कर देता है कि राधा के अन्दर स्वामी आत्मा के अन्तर परमात्मा प्रकाश के अन्दर ही ही शब्द मौजूद है। आप सबके अन्दर पूर्ण ब्रह्म और पूर्ण ज्ञान पहले से ही मौजूद है। सच्चा सतगुरु उसी गुप्त पूर्णता को निखार

देता है।

यही ज्ञान मैं हमेशा सान्फ्रान्सिस्को के अमरीकी सत्संगियों से बांटा करता हूं। इसलिए विलिय। कोम्बी के दूसरे सम्प्रदायों के इष्ट मित्र भी हमेशा अनुरोध करते हैं कि उन्हें हर दौरे पर मैं सत्संग दिया करूं और उनकी समाधि लगवाया करूं। 29 अक्टूबर के सत्संग में सभी सम्मिलित होने वाले सत्संगियों ने शंका निवारण के बाद समाधि लगाई और उसके पश्चात् लोरना के द्वारा बनाया हुआ शुद्ध शाकाहारी भोजन खाया। श्री विनोद शर्मा रात्रि के 10 बजे के करीब श्री कोम्बी के घर पर मुझे लेने के लिए आए और हम रात्रि 11 बजे तक हरकुलिस में पहुंच गए। दूसरे दिन प्रातःकाल 8 बजे की उड़ान से मैं ओकलैंड सैनफ्रान्सिसको के हवाई अड्डे से रवाना होकर उसी दिन प्रातःकाल 10 बजे लौसैन्जलस पहुंच गया। हवाई अड्डे पर डा. विद्यासागर बौशिक लेने के लिए आए हुए थे। दिन भर सत्संगी मिलने के लिए आते रहे। सांयकाल सत्संग पर आए हुए सत्संगियों में कुछ डाक्टर, इन्जीनियर भी उपस्थित थे। हकीम बलीराम जी का पोता अश्वनी सागर तथा डा. मोहन लाल जी का पोता भी सत्संग में सम्मिलित हुए। 31 दिसम्बर को दुपहर के खाने के लिए हम डा. भसीन के घर पर गए। उनका सारा परिवार परमभक्त है। सायंकाल 8 बजे घर से रवाना होकर हम 9 बजे तक हवाई अड्डे पर पहुच गए। रात्रि के पौने बारह हवाई जहाज़ से रवाना होकर मैं प्रातः काल 11 बजे रिचमण्ड वर्जिनियां में पहुंच गया। यहां पर डा. रोडनहाईज़र, जो हमारे आचार्य हैं, हवाई अड्डे पर आए हुए थे। दिन भर उनके निवासस्थान पर ठहरने के पश्चात् सांयकाल उनके घर पर ही सत्संग हुआ।

दूसरे दिन प्रातःकाल रिचमण्ड से रवाना होकर मैं करीब 10 बजे क्लोवलैंड पहुंच गया, जहां पर मेरा ज्येष्ठ पुत्र डा. अरुण हवाई अड्डे पर आया हुआ था। यहां पर 6 नवम्बर तक रहने के पश्चात् हम 5 दिन के लिए मेरीलैण्ड में रहे और बाल्टीमोर के गिरजाघर में एक सत्संग आयोजित हुआ। एक दिन वर्जीनिया रहने के पश्चात् हम 14 नवम्बर को न्यूजर्सी में श्री बलविन्दर, उनकी पत्नी सुनीला के पास शैकवे नगर में ठहरे। इन दोनों का मा वता मंदिर में अगाध विश्वास है। बलविंदर ने कुछ महीने पहले एक नया शाकाहारी भोजनालय आरम्भ किया वह हमें उस नये भोजनालय में ले गया। हमारे साथ श्री जौनवर्टन, उनकी पत्नी सूजन और उनका सुपुत्र मंगलम मेरीलैंड से ही आये थे। बलविंदर ने सभी को शाकाहारी भोजन खिलाया। जौनवर्टन और उसकी पत्नी ने, जो स्वयं शाकाहारी हैं भोजन की बहुत प्रशंसा की। बलविंदर ने मुझे बताया कि उनके इस भोजनालय में खाने वालों की अधिक संख्या अमेरिकनों की थी। मैंने पहले कई सत्संगों में जौनवर्टन के परिवार का जिक्र किया है। दूसरे दिन हम ग्लैनरौक में श्री सुदर्शन लाल शर्मा के घर पर गए, जहां पर सायंकाल सत्संग हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल हम न्यूयार्क से वायुयान द्वारा रवाना होकर लंडन से होते हुए और 22 नवम्बर तक इंग्लैंड और स्वीज़रलैंड में सत्संग देने के पश्चात् 23 नवम्बर को आबूढाबी पहुंच गए। यहां पर 4 दिन रुकने के पश्चात् हम 28 नवम्बर को बम्बई पहुंच गए। 30 नवम्बर को बम्बई से रवाना होकर एक दिन दिल्ली रुकने के बाद 2 दिसम्बर को होशियारपुर पहुंच गए। विदेशी दौरे का यह संक्षिप्त

विवरण इसलिए दिया गया है. क्योंकि नवम्बर का सारा महीना होशियारपुर से दिल्ली और दिल्ली से होशियारपुर आने जाने में इस लिए व्यतीत हुआ क्योंकि 29 दिसम्बर से 2 जनवरी तक अन्तर राष्ट्रीय नव अफलातूनवाद और 'भारतीय दर्शन' के विषय पर देहली में अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित था और इस सम्मेलन में मानवता मन्दिर की ओर से धनराशी के इलाका हर प्रकार के प्रबन्ध के लिए भी सहयोग देना था। इस सम्मेलन में यूरोप अमेरिका और भारत से अनेक दार्शनिकों ने भाग लिया। नव अफलातूनवाद का सम्बन्ध ईसा की तीसरी शताब्दी में सिकन्द्रीया में पैदा हुए उस प्लोटाइनस नामी दार्शनिक और सन्त से सम्बन्धित है, जिसने रोम में अपने दर्शन का प्रचार और प्रसार किया। प्लोटाइनस के गुरु अमोनियस रोम में नये अफलातूनवाद की शिक्षा देते थे। नये अफलातूनवाद में कर्म तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया है। इस विचारधारा का प्रभाव सन्त अगस्टाइन और उराइजा इसाई सन्तों पर भी पड़ा। यह प्रभाव इसाई धर्म में 15वीं शताब्दी तक गुप्त रहा। इस शताब्दी में प्लोटाइनस का साहित्य प्रकाशित हुआ और नवअफलातूनवाद को प्रसारित किया गया। 20वीं शताब्दी में इंग्लैंड के डीनइंग ने प्लोटाइनस के विचारों को प्रसारित करने के लिए फिर से नवअफलातूनवाद का प्रचार किया। 1970 में अमेरिका के पूर्वोदर्शन के विशेषज्ञ ओल्ड डूमिनियन विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष डा.आर. बेन हैरिस ने "अन्तराष्ट्रीय नवअफलातूनवाद परिषद" गठित की और पिछले 22 वर्षों में इस परिषद के अनेक सम्मेलन यूरोप एशिया और अमेरिका मे आयोजित हो चुके है और उन सम्मेलनों में

प्रस्तुत लेखों की पुस्तकें भी छप चुकी हैं) क्योंकि 1975 से 76 तक मैंने डा. हैरिस के दर्शन विभाग में अतिथि प्रोफेसर की हैसियत में पढ़ाया और 1982 तक हर ग्रीष्म अवकाश में भी पढ़ाता रहा, इसलिए मेरा इस परिषद से न ही केवल घनिष्ट सम्बन्ध रहा है, बल्कि मैंने इस परिषद की भारतीय शाखा को भी स्थापित किया है।

1976 में ब्रोक विश्वविद्यालय सैन्ट कैथरीन्जकैनेडा में अन्तराष्ट्रीय नवअफलातूनवाद परिषद का "नवअफलातून-वाद और भारतीय विचारधारा" के विषय पर एक विशाल अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ, जिसमें भारत,यूरोप,कैनेडा और अमेरिका के विद्वानों और प्रोफेसरों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में मैंने भी "प्लोटाइनस के एकत्ववाद और भगवद्गीता के परमपुरुष की धारणा" पर लेख पढ़ा। इस सम्मेलन के सभी लेखों की पुस्तक में मैंने सभी विषयों की भी समीक्षा की थी। 1979 में मद्रास में भी भारतीयदर्शन से सम्बन्धित नवअफलातूनवाद पर सम्मेलन हुआ था। इसी सिलसिले में ही, 29 दिसम्बर से 2 जनवरी 1993 का सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित किया गया था।

सभी विद्वानों के लेख उच्च कोटि के थे और इस बात को प्रमाणित करते थे कि प्लोटाइनस का दर्शन भारतीय दर्शन से मेल खाता है। मैं यहां पर आपको सूचित करना चाहता हूं कि प्लोटाइनस की जीवनी परमदयाल परमसन्त फकीरचन्द जी महाराज की जीवनी से मिलती है। प्लोटाइनस ने परमतत्व को भौतिक जगत, ब्रह्माण्डी मन और ब्रह्माण्डी आत्मा से परे एक पूर्ण सत् के रूप में स्वीकार किया है और यह प्रतिपादित

किया है कि समाधि के द्वारा ही मानव परमतत्व एवं परमधाम को प्राप्त कर सकता है। इस सम्मेलन में आए हुए विद्वानों में से कैनेडा के दार्शनिक डा. जौनमेयर और अमेरिका के दार्शनिक किस्टरज ईवैण्जलेयू ने 3 जनवरी को सल्वान पब्लिक स्कूलमें आयोजित सत्संग में भाग लिया। 6 जनवरी को मानवता मंदिर में विशाल सत्संग में भाग लिया। 6जनवरी कोमानवता मन्दिर में विशाल सत्संग में डा.नमेयर को मानवता के आचार्यपद से सुशोभित किया गया। उन्होंने परमसन्त परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज से कई बार आशीर्वाद प्राप्त किय हुआ है और मानवता धर्म पर जीवन-यापन करते हैं। उन्होंने 6 जनवरी के वक्तव्य में मानवता-धर्म की बहुत सुन्दर व्याख्या की। वह मेरे साथ परमदयाल जी महाराज के जन्मस्थान पंझाल में परमदयाल जी महाराज की स्मृति में बच्चों का स्कूल खोलने के लिए वह कैनेडा से पर्याप्त धन राशी भी भेजेंगे। मैंने यह सब कुछ इसलिए कहा है कि आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि परमदयाल जी की मानवता धर्म के सम्बन्ध में विश्वव्यापी होने की भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित हो रही है।

8 जनवरी को जालन्धर से सायंकाल हम 36 गढ़ एक्सप्रैस से दक्षिण के दौरे के लिए रवाना हुए। इस बार हमेशा की भांति मेरे परमप्रिय बेटे श्री त्रिलोक शर्मा ने हमारे रेलवे के आरक्षण में अपना कीमती समय लगाकर सहायता की। उसने स्वयं मुझे गाड़ी में बिठाकर मेरा बिस्तर बिछाया। उसके प्रेम का कोई पारावार नहीं था, लेकिन उसकी आंखों से प्रतीत होता था कि वह 40 साल की में वैरागी हो गया था। कई महीनों से जब वह मुझे मिलता था, तो उसका व्यवहार जगत् की ओर उदासीनता का ही था। मुझे अत्यन्त दुःख में, आप सभी

सत्संगियों को यह दुखद सूचना देनी पड़ रही है कि मेरे दक्षिण के दौरे से रवाना होने के दो दिन पश्चात् इस महात्मा त्रिलोक की कार दुर्घटना से अचानक मृत्यु हो गयी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मानवता के विश्वव्यापी परिवार को त्रिलोक के परमधाम सिधारने से धक्का लगा है। किन्तु जिन परिस्थितियों की मैंने व्याख्या की है, उनको ध्यान में रखते हुए त्रिलोक के शारीरिक बिछोह को ध्यान में रखना चाहिए। हम 9 तारीख को इटारसी पहुंच कर 10 तक केवल थोड़े समय के लिए ही रुके। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य कुमारी निर्मला शर्मा के नये रैडीमेट कपड़े के स्टोर का उद्घाटन था। इस उद्घाटन पर हमारे सभी इटारसी के सत्संगी और प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए। हम इटारसी से रात्रि को रवाना होकर 11 जनवरी को नागपुर पहुंच गए। यहाँ पर हमें त्रिलोक का दुखद समाचार टैलीफोन से मिला। मैंने काफी देर फोन के द्वारा त्रिलोक की सुयोग्या पत्नी बृन्द्रा को सान्त्वना दी। बहुत से सत्संगी श्री स्वर्गीय रतनसीदास जी कोठारी के निवासस्थान पर दूर २ से आकर ठहरे हुए थे। दूसरे दिन प्रातःकाल 8 बजे के सत्संग में काफी संख्या में सत्संगी सम्मिलित हुए। परमदयाल जी की पोती डा. अगम और उसका मंगेतर डा. सुरेश 11 जनवरी को ही कोठारी जी के घर पर ही आ चुके थे। वह आशीर्वाद लेकर 12 प्रातःकाल वर्धामैडीकल कालेज अपनी duty पर चले गए। हम 11 बजे वायुसेना नगर चले गए, क्योंकि वहाँ पर श्री सुरेश अरोड़ा तथा उनकी पत्नी निर्मला अरोड़ा ने वायुसेना नगर के श्रद्धालु सत्संगी परिवारों के सहयोग से अपने निवासस्थान 34-4 वायुसेना नगर में दुपहर 3 बजे सार्वजनिक सत्संग आयोजित कर रखा था। सत्संग से पूर्व अरोड़ा परिवार ने भंडारा

किया। सभी सत्संगियों ने बड़े प्रेम और उत्साह से सत्संग सुना। उनका प्रेम इतना उमड़ा कि जब हम श्री भगवान व्यास को तेजपुन्ज नामक कार में चन्द्रपुर से महाराष्ट्र के लिए रवाना हो रहे थे, तो अनेक सत्संगी पुरुष और स्त्रीयाँ ज़ार - २ रो रहे थे। चन्द्रपुर में रुकने के पश्चात् हम 13 जनवरी को सायंकाल 3-30 बजे अहेरी पहुंच गये। हर वर्ष की भांति अहेरी के सैंकड़ों सत्संगी नगर से डेढ़ मील पहले ही स्वागत के लिए तैयार थे और हमेशा की भांति नगाड़ों और शहनाई के साथ आतिशबाज़ी के साथ नगर में एक जलूस के रूप में धीरे 2 चले। करीब 1 घन्टे के अन्दर हम सत्संग स्थल पर पहुंचे। रास्ते मैं हज़ारों सत्सँगी अपने २ घरों के आगे स्वागत करते रहे और कहीं - 2 पर उनकी श्रद्धा के अनुसार मुझे गाड़ी से उतरना पड़ा, क्योंकि वे चरन धोते थे और आरती करते थे। उनकी यह अगाध श्रद्धा, उनके हृदय की पवित्रता और पराप्रेम का प्रमाण है। मैं सच्चे दिल से कह रहा हूं कि यह श्रद्धालु मेरे इष्ट हैं। मुझे इन सब में परमदयाल जी की झलक दिखाई देती है।

14 जनवरी प्रात: को हम उस हाई स्कूल मानव कन्या विद्यालय में गए, जो अहेरी की अन्तराष्ट्रीय मानवता परिषद ने इसी वर्ष शुरू किया है। इस विद्यालय में कन्याओं को न ही निशुल्क शिक्षा दी जाती है, बल्कि सभी छात्राओं को बोर्डिंग में नि:शुल्क निवास और भोजन भी दिया जाता है। यद्यपि यह सारा खर्चा अहेरी अन्तराष्ट्रीय मानवता परिषद के अध्यक्ष श्री व्यंकटेश्वर गढ़ मुक्कुलवार सहन कर रहे हैं,तथापि एक वर्ष के पश्चात् महाराष्ट्र सरकार से मान्यता प्राप्त होने पर सारा खर्चा सरकार देगी।

15 जनवरी को 9-30 बजे के सत्संग के बाद दुपहर

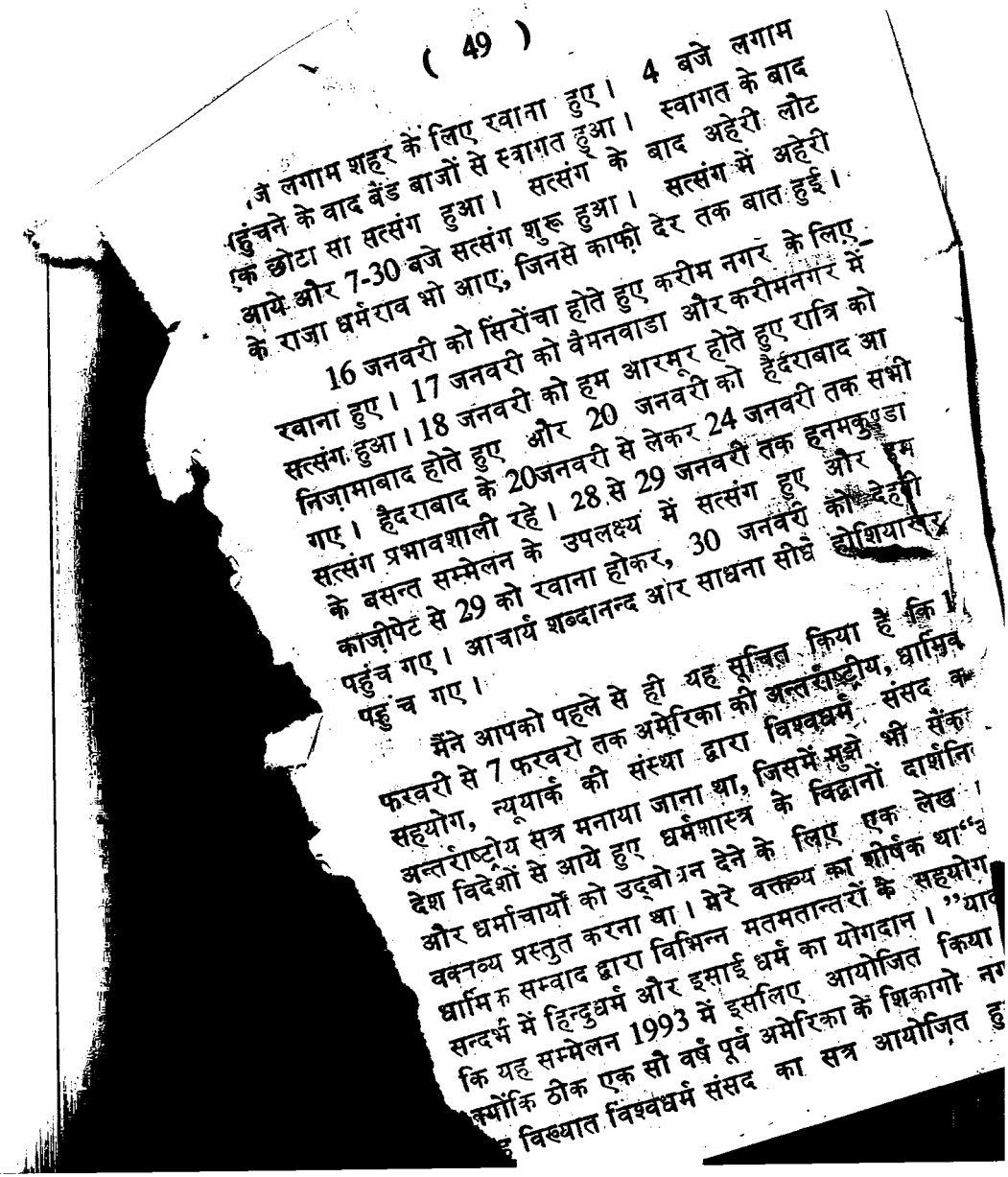

…जे लगाम शहर के लिए रवाना हुए। 4 बजे लगाम …हुंचने के बाद बैंड बाजों से स्वागत हुआ। स्वागत के बाद …क छोटा सा सत्संग हुआ। सत्संग के बाद अहेरी लौट आये और 7-30 बजे सत्संग शुरू हुआ। सत्संग में अहेरी के राजा धर्मराव भी आए; जिनसे काफ़ी देर तक बात हुई।

16 जनवरी को सिरोंचा होते हुए करीम नगर के लिए रवाना हुए। 17 जनवरी को वैमनवाडा और करीमनगर में सत्संग हुआ। 18 जनवरी को हम आरमूर होते हुए रात्रि को निज़ामाबाद होते हुए और 20 जनवरी को हैदराबाद आ गए। हैदराबाद के 20जनवरी से लेकर 24 जनवरी तक सभी सत्संग प्रभावशाली रहे। 28 से 29 जनवरी तक हनमकुण्डा के बसन्त सम्मेलन के उपलक्ष्य में सत्संग हुए और हम काज़ीपेट से 29 को रवाना होकर, 30 जनवरी को देहली पहुंच गए। आचार्य शब्दानन्द और साधना सीधे होशियारपुर पहुंच गए।

मैंने आपको पहले से ही यह सूचित किया है कि 1… फरवरी से 7 फरवरी तक अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय, धार्मिक सहयोग, न्यूयार्क की संस्था द्वारा विश्वधर्म संसद क… अन्तर्राष्ट्रीय सत्र मनाया जाना था, जिसमें मुझे भी सैंक… देश विदेशों से आये हुए धर्मशास्त्र के विद्वानों दार्शनि… और धर्माचार्यों को उद्‌बोधन देने के लिए एक लेख … वक्तव्य प्रस्तुत करना था। मेरे वक्तव्य का शीर्षक था "… धार्मिक सम्वाद द्वारा विभिन्न मतमतान्तरों के सहयोग… सन्दर्भ में हिन्दुधर्म और इसाई धर्म का योगदान।" याद… कि यह सम्मेलन 1993 में इसलिए आयोजित किया … क्योंकि ठीक एक सौ वर्ष पूर्व अमेरिका के शिकागो नग… …विख्यात विश्वधर्म संसद का सत्र आयोजित हु…

जिसमें इसी शताब्दी के परमसन्त, परमसन्यासी ।
ने भाग लिया था। यहां पर उस 1893 के धर्म सम्मे
के सम्बन्ध में एक विशेष घटना का उल्लेख करना उ
होगा।

स्वामी रामकृष्ण परम हंस के शिष्य और उत्तराधिकारी स्वामी विवेकानन्द को उस विश्वधर्म संसद में सम्मिलित होने का लिखित निमन्त्रण भेजा गया था। जब विवेकानन्द शिकागो पहुंचे, तो उस संसद का अन्तिम सत्र हो रहा था। पहले तो वह औपचारिक निमन्त्रण पत्र भी लाना भूल गए थे! जब किसी प्रकार से वह सम्मेलन के अन्तिम सत्र में पहुंचे तो उसके समापन में केवल कुछ मिनट ही बाकी रह गए थे। सम्मेलन के अध्यक्ष ने दूर से स्वामी जी की वेशभूषा को देखकर कहा, प्रिय बन्धुओ! इस सम्मेलन में भारत की ओर से किसी ने भाग नहीं लिया। मैं एक साधु को दूर से देख रहा हूं। मैं उन्हें मंच पर आने के ए आह्वान करता हूं। मेरे पास उनके लिए केवल 4 नट बाकी हैं। मैं आशा करता हूं कि वह संक्षेप में तीय धर्म और दर्शन के बारे में कुछ कहेंगे।" जब विवेकानन्द मंच पर पहुंचे, तो उन्होंने वक्तव्य आरम्भ ए कहा, "मेरे प्रिय भाईयो और बहनों। मैं अध्यक्ष को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे 4 मिनट के रतीय दर्शन पर विचार व्यक्त करने के लिए आदेश मैं उन चार मिनट में से उन्हें 3 मिनट वापस मैं उस एक मिनट में थे एक ही वाक्य कहूंगा, दर्शन वहां से आरम्भ होता है, जहाँ पश्चिमी गय त होता है।' इस वाक्य को सुनते ही श्रोताओं र में न चाहते हैं कि स्वामी जी पूरा समय लेकर ा न की व्याख्या करें।" इसके फल

विवेकानन्द ने उस सम्मेलन में 9 घन्टे लगातार भारतीय दर्शन और धर्म का विवेचन किया। इसी कारण 1993 में विश्व धर्म संसद का भारत में ही आयोजन किया गया। इस सम्मेलन से निवृत होकर मैं 8 फरवरी को होशियारपुर पहुंच गया। यहां तक की दौरे और मानवतामंदिर की अतिविधियों की सूचना काफी हैं। अगले मासिक सन्देश में आपको तत्कालिका सूचना दी जायेगी। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि आपको इस सन्देश से प्रेरणा प्राप्त हो और आप मानवता के असूलों पर चलते हुए गृहस्थ जीवन का सुख भोगते हुए ईश्वर के साक्षात्कार को प्राप्त करें। सब को राधास्वामी।

आपका फकीरमय
मानव

...वन पर्व बैशाखी 1993

...त: 900 से 1200 तक
7.00 से आशीर्वाद
...ा ध्वज आरोहण
...0 तक सत्संग
तक सत्संग
...ी मीटिंग
...0 सत्संग भंडारा और विदाई
.00 सायं तक सालवान

सत्संगियों के सूचनार्थ

परम सन्त सद्गुरु हिज़ होलीनेस हजूर मानव दयाल जी महाराज का राजस्थान और मध्य प्रदेश का सत्संग-दौरा

दिनांक	प्रोग्राम	पता
15-3-93	सत्संग	
16-3-93	देहली प्रस्थान	
17-3-93	देहली विश्राम	
	सत्संग अलवर---श्री मूलचन्द्र गांधी वकील	
18-3-93	ब्रह्मचारी चौक, अलवर	
"	जयपुर श्री महाराज कृष्णा शर्मा 16सी	
19-3-93 से	(बी) मोतीमार्ग बापूनगर, जयपुर	
"	भीलवाड़ा-श्री तेजेन्द्र मणि गुप्त	
21-3-93 तक	5A-1, शास्त्री नगर	
	दयालसंत मत सत्संग केन्द्र	
22-3-93 से	(मीनाक्षी मेल से) भीलवाड़ा	
24-3-93 तक	सत्संग उज्जैन--श्री श्याम लाल गोयल	
	नं 31, बृजराज गीताकालोनी	
25-3-93 से	वुधवरिया बाजार उज्जेन म. प्र.)	
27-3-93 तक	" इटारसी--श्री चरनजीत सिंह जी	
	पंजाब साइकिल स्टोर इटारसी एवं	
	श्री सुन्दरदास जी	
28-3-93	सिन्धी कालोनी, इटारसी	
31-3-93	प्रस्थान	
	होशियारपुर आगम-	

राधास्वामी नाम-ध्वनि

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
अलख अगम और अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम ।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।

शुक्रवार 16-4-93 को सायं 5-00 बजे डो. सो. माडल स्कूल सैक्टर 7 पंचकुला में परमसंत हजूर मानव दयाल जी महाराज सत्संग देंगे। श्री देशराज शर्मा से फोस नं. 560774 पर संपर्क करें अधिक जानकारी के लिए।

BOOK POST

Regd No. 26265/74
MANAV MANDIR

MARCH. 10th 1993
PB HSP—5

Address

976. Sh. S. Vithal, S/O. Sh.
Arjan Rao Ji, PO. TQ Banswada,
(Gauliguder)-NIZAMABAD. (A.P.).

From :
MANAVATA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR. 146 001
PHONE : 22639

Shiv Dev Rao Press Manavata Mandir, Hoshiarpur (Pb.)